A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 02 मई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 11 अंक 209, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

प. बंगाल चुनाव में इस बार काफी कुछ पहली बार हुआ

शुभज्योति घोष

पश्चिम बंगाल अब 4 मई का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा है, जब मालूम चलेगा कि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) राज्य में लगातार चौथी बार सत्ता में लौटेगी या भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पश्चिम बंगाल में पहली बार सत्ता हासिल करेगी। पश्चिम बंगाल चुनाव को लेकर अब तक आए लगभग सभी एग्ज़िट पोल से संकेत मिलते हैं कि टीएमसी और बीजेपी के बीच वोट शेयर का अंतर काफ़ी कम रहेगा। अगर किसी एक पार्टी को बहुमत मिलता भी है, तो उसकी जीत का अंतर बहुत बड़ा होने की संभावना नहीं है। करीब 50 साल से पश्चिम बंगाल में ज़्यादातर एकतरफ़ा चुनाव होते रहे हैं। जिस भी पार्टी को जीत मिली, उसे भारी बहुमत भी हासिल हुआ। पश्चिम बंगाल में हाल ही में संपन्न चुनाव कई अन्य कारणों से बिल्कुल अलग थे। लेकिन वे कौन से कारण थे जिन्होंने पश्चिम बंगाल के इस चुनाव को इतना अनूठा बना दिया?

पश्चिम बंगाल लंबे समय से राजनीतिक हिंसा से जुड़ा रहा है। मतदान बूथों पर कब्जा करना, धांधली, राजनीतिक हत्याएं, ये सब राज्य की राजनीति का हिस्सा बन गए थे। इसके बावजूद यह चुनाव लगभग पूरी तरह से शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कुछ छिटपुट घटनाओं को छोड़कर, कोई बड़ी गड़बड़ी की शिकायतें भी नहीं मिलीं।

पहले चरण में 152 सीटों पर मतदान होने के बाद चुनाव आयोग ने एक भी बूथ पर दोबारा वोटिंग का आदेश नहीं दिया। इसका एक प्रमुख कारण केंद्रीय सुरक्षा बलों की भारी तैनाती है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 29 अप्रैल को कहा कि इन बलों में से लगभग एक तिहाई, करीब 70 हज़ार जवान, वोटिंग होने के बाद भी दो महीने तक राज्य में ही रहेंगे। हालांकि चुनाव बाद हिंसा को रोकने में यह कितना कारगर होगा, यह तो आने वाले दिनों में ही साफ़ होगा। लेकिन कि 2026 के विधानसभा चुनाव ने राज्य में राजनीतिक हिंसा के इतिहास में एक नई इबारत लिखी है।

इस चुनाव के दोनों चरणों में कुल मतदान प्रतिशत 92.47% रहा। ये भारत की स्वतंत्रता के बाद से पश्चिम बंगाल में किसी भी चुनाव में अब तक का सबसे अधिक मतदान है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में 90% या उससे अधिक मतदान पश्चिम बंगाल के लिए भी अभूतपूर्व है। कई पर्यवेक्षक इस असामान्य रूप से उच्च मतदान को मतदाता सूचियों के 'विशेष गहन संशोधन' (एसआईआर) से जोड़ रहे हैं। उनका तर्क है कि मतदाता सूचियों से 90 लाख से ज़्यादा नाम हटाए जाने के कारण मतदाता सूची काफ़ी छोटी हो गई है और यह ज़्यादा वोटिंग होने की वजह है। दूसरे शब्दों में, नागरिक अधिकारों के संभावित हनन की चिंताओं ने भागीदारी को प्रेरित किया होगा।

इससे यह भी साफ़ हो सकता है कि क्यों कई मतदाता अपने निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान करने के लिए वापस लौटे। इनमें बड़ी संख्या में प्रवासी मज़दूर अन्य राज्यों से अपने गांव वापस आए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आम तौर पर देश में कहीं भी चुनाव प्रचार करने के बाद रात में दिल्ली लौटते हैं। इस परंपरा को तोड़ते हुए वे कई बार कोलकाता के राजभवन में रात भर रुके। इतना ही नहीं, उन्हें सुबह-सुबह गंगा घाटों पर जाते, आम लोगों से बातचीत करते और कैमरे के साथ नदी में नौका विहार करते भी देखा गया। उन्होंने उत्तरी कोलकाता की सड़कों और पड़ोसी हावड़ा की तंग गलियों में रोड शो किए और जनता के बेहद करीब पहुंचे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि अगर बीजेपी जीतती है तो वे स्वयं शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे।

मोदी मंत्रिमंडल के दूसरे सबसे प्रमुख व्यक्ति अमित शाह भी कई दिनों तक पश्चिम बंगाल में सक्रिय रहे। उन्होंने राज्य भर में लगातार रैलियों को संबोधित किया। जब विपक्षी नेताओं ने सवाल उठाया कि देश के गृह मंत्री कोलकाता में चुनाव प्रचार में इतना समय क्यों बिता रहे हैं, तो शाह ने इस पर कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया।

बीजेपी के वैचारिक पूर्वज जनसंघ की सह स्थापना इसी राज्य के श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने की थी, इसलिए पश्चिम बंगाल पर शासन करना लंबे समय से उसका एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रहा है। इस चुनाव को उस महत्वाकांक्षा को सच करने का सबसे अच्छा मौका माना जा रहा है। शायद यही कारण है कि मोदी ने खुद घोषणा की, 'मैं हर सीट पर उम्मीदवार हूं। '

दिलचस्प बात यह है कि नरेंद्र मोदी ने इस चुनाव में जिस बात का ज़िक्र किया, वही बात ममता बनर्जी, जो पिछले 15 साल से मुख्यमंत्री हैं, लगभग हर चुनाव में कहती आ रही हैं। वह अक्सर मतदाताओं से कहती हैं, 'आपको इस बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि आपके निर्वाचन क्षेत्र में तृणमूल का उम्मीदवार कौन है। मान लीजिए कि मैं सभी 294 सीटों पर उम्मीदवार हूं। मुझे ध्यान में रखकर वोट दें।' दरअसल, वह जादवपुर और दक्षिण कोलकाता जैसे निर्वाचन क्षेत्रों से लगातार 42 सालों से जीतती आ रही हैं। उनकी मौजूदा सीट भवानीपुर भी इसी क्षेत्र में आती है।

इतिहास के नज़रिए से देखें तो उन्होंने यहां आसानी से जीत हासिल की है। अक्सर उन्हें ज़्यादा प्रचार की जरूरत भी नहीं पड़ी। हरीश चटर्जी स्ट्रीट स्थित उनका पैतृक घर भी इसी निर्वाचन क्षेत्र में आता है। लेकिन इस बार भवानीपुर से बीजेपी के सुवेंदु अधिकारी के ख़िलाफ़ चुनाव लड़ते हुए, उन्हें पूरे निर्वाचन क्षेत्र में ज़ोर-शोर से प्रचार करते देखा गया। कई बार तो वह अपना आपा भी खो बैठीं। इससे कई पर्यवेक्षक हैरान रह गए। 29 अप्रैल को मतदान के दिन उन्हें देखने वालों ने गौर किया कि उनके हाव-भाव में आत्मविश्वास की कमी दिख रही थी। टीएससी का डिफ़ेंसिव पोज़िशन में यह चुनाव लड़ना, इस मुकाबले की एक ख़ास बात रही।

पश्चिम बंगाल में हाल के समय में 'बंगाली अस्मिता' का चुनावी चर्चा पर हावी होना शायद ही कहीं और देखने को मिलता है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस ने लगातार खुद को बंगाल और बंगालियों की पार्टी के रूप में पेश किया है। साथ ही दावा किया है कि बंगाली संस्कृति की रक्षा के लिए वही सबसे सही हैं। 2021 के चुनाव में उसका मुख्य नारा था, 'बंगाल अपनी बेटी चाहता है।'

इस चुनाव से पहले भी, पश्चिम बंगाल के लोगों को बांग्लादेशी होने के संदेह में अन्य राज्यों में परेशान किए जाने की घटनाओं को 'बंगालियों पर ख़तरे' के सबूत के रूप में पेश किया गया था। दूसरी ओर बीजेपी को इस धारणा से जूझना पड़ा है कि वह मूल रूप से हिंदी भाषी क्षेत्र की पार्टी है। और इसका बंगाल से सांस्कृतिक रूप से कोई संबंध नहीं है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बरगी डैम में क्रूज हादसे में अब तक 9 शव मिले

28 को बचाया, 3 बच्चे समेत 4 लापता

जबलपुर (नप्र) मध्य प्रदेश के जबलपुर स्थित बरगी डैम में गुरुवार शाम करीब 5 बजे पर्यटन विभाग का एक क्रूज अचानक आई तेज आंधी के चलते डूब गया। अब तक 9 शव मिल चुके हैं।

प्रशासन के मुताबिक, 28 लोगों को बचा लिया गया है। तीन बच्चों सहित 4 लोग लापता हैं। बताया जा रहा है कि हादसे के वक्त क्रूज में लगभग 43 से 47 पर्यटक थे। टिकट सिर्फ 29 लोगों की कटी थी।

हादसा किनारे से करीब 300 मीटर दूर हुआ, जिस समय क्रूज डूबा, उस वक्त हवा की रफ्तार 74 किलोमीटर प्रतिघंटा थी। बरगी सिटी सीएसपी अंजुल मिश्रा के मुताबिक, एसडीआरएफ ने कई लोगों को बचाया, लेकिन अंधेरा और खराब मौसम से राहत कार्य प्रभावित हुआ।

पीएम मोदी ने जताया दुख, मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख और घायलों को 50 हजार रुपए- हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख जताया है। उन्होंने प्रधानमंत्री राहत कोष से मृतकों के परिवार जनों को दो-दो लाख रुपए और घायलों को 50 हजार रुपए देने की घोषणा की है।

क्रूज पायलट बोले- संभलने का मौका ही नहीं मिला- क्रूज के पायलट महेश ने बताया, सुरक्षा के इंतजाम तो थे, लेकिन अचानक आए तेज तूफान के चलते क्रूज अनियंत्रित हो गया। किसी को संभलने का मौका ही नहीं मिला। महेश को 10 साल का अनुभव है।

क्रूज नाव अचानक आए तेज तूफान के कारण पलट गई- इस हादसे में नौ लोगों के शव मिल चुके हैं। जबकि 28 लोगों को बचा लिया गया है। वहीं, छह लोग अब भी लापता हैं। आज सुबह मिली जानकारी के अनुसार, क्रूज में कुल 43 लोग सवार थे। अधिकारियों के मुताबिक, गुरुवार शाम 29 यात्रियों और दो चालक दल के सदस्यों को लेकर जा रही क्रूज नाव अचानक आए तेज तूफान के कारण पलट गई। तेज हवाओं और ऊंची लहरों के बीच नाव संतुलन खो बैठी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, यात्रियों ने नाव किनारे लगाने की गुहार लगाई, लेकिन आवाज चालक दल तक नहीं पहुंच सकी और हादसा हो गया।

दो दशक पुराना है ये क्रूज- मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के अधिकारी योगेंद्र रिछारिया ने मीडिया को बताया कि इस क्रूजका निर्माण 2006 में किया गया था। इसमें 60 यात्रियों की बैठने की क्षमता है।

क्रूज संचालन पर रोक, जान बचाने वाले 15 अगस्त को होंगे सम्मानित, सीएम ने दिए जांच के आदेश

बरगी डैम क्रूज हादसे में नौ लोगों के शव मिले हैं। क्रूज को निकाल लिया गया है। सीएम मोहन यादव और पर्यटन मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने मामले में जांच के निर्देश दिए हैं। सीएम मोहन यादव ने कहा कि बरगी बांध में हुआ हादसा चक्रवात की वजह से हुआ है। उसकी विस्तृत जानकारी जांच रिपोर्ट के बाद ही मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि इस हादसे में मन को बेहद दुख पहुंचा। वहीं, दुर्घटना में रेस्क्यू टीम के जिन सदस्यों ने लोगों को पानी से बाहर निकाला, उनका 15 अगस्त को सम्मान किया जाएगा। क्रूज डूबने के बाद कई लोगों ने अपनी जान दांव पर लगाकर लोगों को बचाया था। वहीं, पर्यटन मंत्री धर्मेंद्र लोधी ने कहा है कि एमपी में क्रूज संचालन पर रोक लगा दी गई है। क्रूज फिटनेस और मानकों की जांच के बाद ही इसका संचालन होगा। साथ ही क्रूज चालक की योग्यता का परीक्षण अनिवार्य होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बरगी बांध में हुई क्रूज दुर्घटना में दिवगंतों के परिजनों से आज जबलपुर में मिलकर उन्हें ढांढस बंधाया।

4-4 लाख रुपये आर्थिक सहायता की घोषणा- गौरतलब है कि मोहन यादव ने कहा था कि इस हादसे में जो जनहानि हुई है, वह अत्यंत पीड़ादायक है। शोकाकुल परिजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। मृतकों के परिवारजनों को राज्य शासन की ओर से 4-4 लाख की आर्थिक सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए हैं।

जिंदगी की जंग हारी मां, लेकिन ममता जीत गई, मां की पकड़ बच्चे से नहीं छूटी, यह दृश्य देखकर लोगों की रूह कांप उठी

बरगी डैम हादसे के बाद मां और बेटे का दिल दहला देने वाला दृश्य सामने आया, जहां मौत के बाद भी मां अपने मासूम बेटे को सीने से लगाए रही। बेटा भी मां के सीने पर सिर रखकर हमेशा के लिए सो गया। बरगी की त्रासदी से आई यह तस्वीर लोगों को काफी भावुक कर रही है। मौत के बाद भी मां की ममता जीत गई। लाइफ जैकेट पहने एक मां और उसके सीने से लिपटा उसका मासूम बेटा। जब दोनों के शव बरगी डैम के पानी से बाहर निकाले गए, तो यह दृश्य देखकर लोगों की रूह कांप उठी। यह मंजर उस दर्दनाक हादसे के बाद का था, जिसने हर किसी को भीतर तक झकझोर दिया। मौके पर मौजूद लोग हों या सोशल मीडिया पर इस तस्वीर को देखने वाले–हर आंख नम हो गई। यह सिर्फ एक हादसा नहीं था, बल्कि ममता की वह आखिरी झलक थी, जो मौत के बाद भी जिंदा रही। मां आखिरी सांस तक उस भयावह त्रासदी से जूझती रही, लेकिन अपने बच्चे को सीने से लगाए रखा। मौत भी उसके आंचल से मासूम को अलग नहीं कर सकी। जब यह दृश्य सामने आया, तो हर दिल सिहर उठा। यह तस्वीर सिर्फ एक हादसे की कहानी नहीं कहती, बल्कि उस अटूट ममता की गवाही देती है, जो जीवन के पार भी अपने बच्चे को थामे रहती है। राहत-बचाव कार्य में जुटी टीम का वीडियो भी सामने आया है।

● महंगाई का डबल झटका...

कमर्शियल के साथ छोटू ने भी दिखाया 'रौद्र' रूप

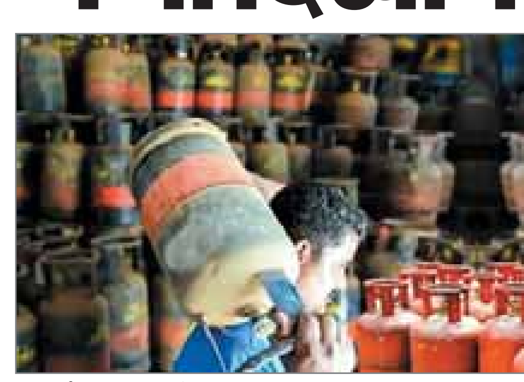

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकारी तेल कंपनियों ने शुक्रवार से 19 किलोग्राम वाले कमर्शियल एलपीजी सिलिंडर की कीमत में 993 रुपये की बड़ी बढ़ोतरी कर दी है। दिल्ली में अब 19 किलो के कमर्शियल सिलिंडर की नई कीमत 3071.50 रुपये हो गई है। इससे पहले यह सिलिंडर लगभग 2078.50 रुपये में उपलब्ध था। हालांकि, घरेलू उपयोग वाले 14.2 किलो के एलपीजी सिलिंडर की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। आम उपभोक्ताओं को इस बढ़ोतरी का सीधा असर नहीं पड़ेगा।

● **भारी बढ़ोतरी, 993 रुपए बढ़ी कीमत, छोटू 261 रुपए महंगा**

5 किलो वाला 'छोटू' भी हुआ महंगा

5 किलोग्राम वाले एफटीएल सिलिंडर की कीमत में भी तत्काल प्रभाव से 261 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। 5 किलोग्राम वाला फ्री ट्रेड एफटीएल सिलिंडर, जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से छोटे प्रतिष्ठान और सीमित व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है। उसमें सब्सिडी नहीं दिया जाता है। इसकी कीमत बाजार दरों के करीब होती है, जिससे यह वैश्विक उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है। यह बदलाव सिर्फ कमर्शियल और थोक एलपीजी के लिए लागू होगा। जिनका भारत में कुल खपत में बहुत कम हिस्सा है। घरेलू एलपीजी, जो सब्सिडी वाला है और खाना पकाने के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है, उसे इस बदलाव से बाहर रखा गया है। बता दें कि, 19 किलोग्राम वाले सिलेंडर की कीमत में हुई इस भारी बढ़ोतरी का सीधा असर रेस्टोरेंट, होटल, बेकरी और अन्य ऐसे प्रतिष्ठानों पर पड़ेगा। जो अपने दैनिक कार्यों के लिए कमर्शियल एलपीजी पर निर्भर रहते हैं। उद्योग से जुड़े लोग अक्सर बढ़ी हुई लागत का कुछ हिस्सा उपभोक्ताओं पर डाल देते हैं।

शरद की सुबह

स्मृतियाँ तुम्हारे प्रेम की क्षतिपूर्ति स्वरूप मिलीं
जो तुम्हारे होने का भ्रम बनाए रखती हैं सदा ।

बाँट लेता हूँ तुम्हारी अनुपस्थिति
फेसबुक, इंस्टाग्राम से
हर स्क्रोल में दिख जाता है हमारा साथ
बिखरा पड़ा रील्स दर रील्स,
मोबाइल के की-पैड पहचानते हैं तुम्हारा नाम
एक अक्षर टाइप होते ही पहुँचा देते हैं
संवाद के आख़िरी शब्द तक,
जिसे यह सदी कहती है ऑटोसजेशन
वह तुम्हारी स्मृतियों का मशीनी षड्यंत्रभर है।

याद रहती हो तुम
उन अनगिन पासवर्डों सी
जिसे बदलने की चेष्टा में
गुजरना होगा मुझे
तुम्हारे साथ के सभी तारीख़ों से ।

सुबह-सुबह अपना पहला चेहरा शीशे में देखते ही
जैसे ऑन हो जाता हो कोई वीडियो कॉल
अनछुए स्पर्श की कचोट से भर जाता है पूरा
वातावरण ।

मन की सीक्रेट गैलरी में तुम्हारी
कितनी ही तस्वीरें सुरक्षित रहीं
जिनके पास नहीं है विकल्प
शिफ्ट प्लस डिलीट का,
प्रेम स्मृतियों का बैकअप है
कभी जो करप्ट हुआ कोई किस्सा
तो एक सिरा छूते ही खुल जाती है पूरी कहानी ।

– केतन यादव

लक्षद्वीप में शुरू होगी पहली कमर्शियल सी-प्लेन सेवा

● **'स्काईहॉप एविएशन' को मिल गई डीजीसीए की मंजूरी**

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में एविएशन का दायरा आधिकारिक तौर पर जमीन से बढ़कर पानी तक पहुंच गया है। देश में अब कमर्शियल सीप्लेन सेवाएं शुरू होने जा रही है। इसको लेकर कमर्शियल सीप्लेन ऑपरेटर, स्काईहॉप एविएशन को डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन से अपना एयर ऑपरेटर सर्टिफिकेट मिल गया है, जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। मालूम हो कि, इस कंपनी ने हाल ही में ऋषिकेश में पानी से उड़ान भरने और पानी पर उतरने का सफल परीक्षण पहले ही कर लिया था। डीजीसीए से मंजूरी मिलने के साथ ही, स्काई होप भारत की पहली कमर्शियल सीप्लेन एयरलाइन बनने के लिए पूरी तरह तैयार है। जानकारी के अनुसार, ऑपरेशन का पहला चरण लक्षद्वीप के खूबसूरत द्वीपों पर केंद्रित होगा। यह रूट पांच द्वीपों को आपस में जोड़ेगा और उन्हें भारत की मुख्य भूमि से भी लिंक करेगा। ये सेवाएं 19 सीटों वाले विमान से शुरू होंगी। यह नई कमर्शियल एयरलाइन उन दूरदराज के द्वीपों, पहाड़ी इलाकों और पानी के किनारे बसे उन पर्यटन स्थलों को जोड़ेगी, जहां हवाई अड्डे बनाना मुश्किल होता है। इसका असर उन यात्राओं पर भी पड़ेगा, जिनमें नाव या सड़क के रास्ते घंटों या दिन लग जाते थे; अब यात्रा का समय काफी कम हो जाएगा। इससे, लक्षद्वीप जैसी जगहों को, जहां झीलें, समुद्र तट और नदियों के किनारे हैं, पर्यटन के क्षेत्र में भी जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा।

एक साल से एओसी के लिए कोशिश जारी थी

बता दें कि, सीप्लेन एक ऐसा विमान है जिसे पारंपरिक रनवे के बजाय पानी से उड़ान भरने और पानी पर ही उतरने के लिए डिजाइन किया गया है। यह झीलों, नदियों या समुद्र जैसे खुले जलस्रोतों से उड़ान भरने या उन पर उतरने के लिए तैरते हुए पोंटून या नाव जैसे निचले हिस्से का इस्तेमाल करता है। कंपनी की संस्थापक अवनी सिंह ने बताया कि एओसी के लिए पिछले एक साल से लगातार कोशिश की जा रही थी। उन्होंने आगे कहा कि, अब जब रेगुलेटरी मंजूरी मिल गई है, तो उम्मीद है कि कमर्शियल ऑपरेशन जल्द ही शुरू हो जाएंगे, जिसमें सबसे पहले लक्षद्वीप के रूट शुरू होंगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20°c
न्यूनतम 18°c

2

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 02 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

गैस के बाद पेट्रोल-डीजल की बढ़ सकती हैं कीमतें

● राहुल गांधी का दावा, की मोदी सरकार की आलोचना

नई दिल्ली (एजेंसी)। 01 मई से देशभर में कमर्शियल गैस सिलिंडर की कीमत में भारी बढ़ोतरी हुई है। सरकार ने आज से कमर्शियल एलपीजी सिलिंडर की कीमत में 993 रुपये की बढ़ोतरी की घोषणा की है। सिलिंडर की कीमतों में हुई बढ़ोत्तरी के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी की प्रतिक्रिया सामने आई है। राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि मैंने पहले ही कहा था कि चुनावों के बाद ऐसा होगा। उन्होंने इसे महंगाई का बड़ा संकेत बताया और छोटे व्यवसायों व आम जनता पर इसके असर को लेकर चिंता जताई। राहुल गांधी ने शुक्रवार को सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए आरोप लगाया कि चुनावों के बाद घरेलू महंगाई का दबाव बढ़ने की उम्मीद थी, और उन्होंने कमर्शियल एलपीजी सिलेंडरों की कीमतों में आई भारी बढ़ोतरी की ओर इशारा किया। राहुल गांधी ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत एक ही दिन में 993 रुपये तक बढ़ गई है। उन्होंने इसे अब तक की सबसे बड़ी एकदिवसीय बढ़ोतरी बताया।

मैंने पहले ही कहा था...यह चुनावी बिल है– राहुल गांधी ने यह भी कहा कि फरवरी से अब तक कुल 1380 रुपये की वृद्धि हुई है, जो लगभग 81 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। राहुल गांधी ने लिखा कि मैंने पहले ही कहा था कि चुनाव के बाद महंगाई बढ़ेगी। आज कमर्शियल गैस सिलेंडर 993 रुपये महंगा हो गया है। यह एक दिन में सबसे बड़ी बढ़ोतरी है। यह चुनावों का बिल है। फरवरी से अब तक 1,380 की बढ़ोतरी सिर्फ 3 महीनों में 81 फीसदी का भारी उछाल आया है। राहुल गांधी ने आगे और बढ़ोतरी की भी चेतावनी दी, और कहा कि गैस के बाद, पेट्रोल और डीजल की कीमतें भी बढ़ सकती हैं। राहुल गांधी ने कहा कि एलपीजी की कीमतों में बढ़ोतरी का असर चाय की दुकानों, ढाबों, होटलों, बेकरियों और मिठाई की दुकानों जैसे छोटे व्यवसायों पर पड़ेगा, और साथ ही घरेलू खर्च भी प्रभावित होंगे। उन्होंने कहा मोदी सरकार जल्द ही पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतें बढ़ाएगी।

सामने भगवान बुद्ध और हाथ जोड़कर बैठे सीएम सम्राट

● बुद्ध पूर्णिमा पर बिहार के मुख्यमंत्री ने की भगवान बुद्ध की पूजा

पटना (एजेंसी)। भगवान बुद्ध की जयंती (बुद्ध पूर्णिमा) के अवसर पर आज पूरा बिहार तथागत की शिक्षाओं और शांति के संदेशों से सराबोर दिखा। इसी कड़ी में प्रदेश के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पटना के ऐतिहासिक बुद्ध स्मृति पार्क पहुंचे, जहां उन्होंने विशेष धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया। मुख्यमंत्री ने यहां स्थापित भगवान बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष शीश नवाया और बोधगया और श्रीलंका से लाए गए पवित्र बोधि वृक्षों की विधि–विधान से पूजा की। ये आयोजन न केवल धार्मिक महत्ता का प्रतीक रहा, बल्कि मुख्यमंत्री ने इसके माध्यम से विश्व शांति और देश–प्रदेश में अमन–चैन बनाए रखने का संदेश भी दिया। इससे पहले के सालों में बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर अक्सर नीतिश कुमार बतौर सीएम

मौजूद रहते थे। **पवित्र अस्थि अवशेषों के सामने किया ध्यान–** बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बुद्ध स्मृति पार्क के भीतर स्थित पाटलिपुत्र करुणा स्तूप में प्रवेश किया। वहां उन्होंने भगवान बुद्ध के अत्यंत पवित्र अस्थि अवशेषों की पूजा–अर्चना की। मुख्यमंत्री ने स्तूप की परिक्रमा की और कुछ समय मौन रहकर भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का स्मरण करते हुए ध्यान लगाया। उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं के साथ बैठकर मंगल कामना की और प्रार्थना की कि बिहार विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर रहे। मुख्यमंत्री को बौद्ध भंते द्वारा बोधगया के बोधिवृक्ष और आनंद बोधि वृक्ष की पूजा कराई गई। श्रीलंका के अनुराधापुरम से लाए गए ऐतिहासिक बोधि वृक्ष की भी विशेष अर्चना की गई। मुख्यमंत्री ने करुणा स्तूप में भगवान बुद्ध के पवित्र अस्थि अवशेषों को नमन किया। बौद्ध भिक्षुओं के साथ बैठकर विव शांति के लिए मंगल पाठ और सामूहिक ध्यान किया गया।

15 पोलिंग बूथों पर दोबारा डाले जाएंगे वोट

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 के दूसरे चरण में कुछ जगहों पर ईवीएम से छेड़छाड़ की घटना पर चुनाव आयोग ने सख्त रुख अपनाया है। चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल की दो विधानसभा सीटों के 15 पोलिंग बूथों पर दो मई को पुनर्मतदान का आदेश दिया। बताया गया है कि मगराहाट पश्चिम और डायमंड हार्बर विधानसभा क्षेत्रों के तहत आने वाले 15 बूथों पर दोबारा चुनाव कराने का निर्णय लिया गया है।

● मोदी यूरोप में, अमेरिका-रूस के विदेश मंत्री दिल्ली में होंगे

कूटनीति के मोर्चे पर भारत के लिए निर्णायक होगा मई

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान-अमेरिका-इजरायल में तनाव के बीच कूटनीति के मोर्चे पर मई का महीना भारत के लिए अहम होने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 4 यूरोपीय देशों के दौरे पर जाएंगे। इस दौरान इटली, वेटिकन, नॉर्वे, स्वीडन, नीदरलैंड जैसे देशों के साथ ट्रेड, रक्षा सहयोग,

यूक्रेन और पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष पर चर्चा होने की संभावना है। वहीं विदेश मंत्री एस जयशंकर ब्रिक्स और क्वाड की बैठकों में शामिल होंगे। दोनों अंतरराष्ट्रीय संगठनों की बैठक भारत में ही होने वाली है। इसके अलावा अमेरिकी रक्षा मंत्री मार्को रुबियो, रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव भारत दौरे पर होंगे।

वियतनाम के राष्ट्रपति आएंगे भारत

वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम 5 से 7 मई, 2026 तक भारत की तीन–दिवसीय राजकीय यात्रा पर आएंगे। इस यात्रा का मकसद दोनों देशों की व्यापक रणनीतिक साझेदारी की 10वीं वर्षगांठ के अवसर पर रक्षा, व्यापार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संबंधों को और मजबूत करना है। इस दौरान वे प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति मुर्मू से करेंगे, और उनके मुंबई व बोधगया जाने का भी कार्यक्रम है। साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स मई 2026 के अंत में भारत की यात्रा पर आने वाले हैं। माना जा रहा है कि वे 20 मई को मुंबई और 22 मई को नई दिल्ली पहुंचेंगे।

न रुकने की झंझट और न लाइन में लगने की टेंशन

● देश का पहला बैरियरलेस टोल प्लाजा गुजरात में शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत अब बिना किसी रुकावट के हाईवे यात्रा के एक नए दौर की ओर बढ़ने के लिए तैयार है। गुजरात के सूरत में भारत का पहला बैरियर-मुक्त मल्टी-लेन फ्री फ्लो टोलिंग सिस्टम एनएच-48 पर स्थित चोर्यासी टोल प्लाजा पर आधिकारिक तौर पर लागू कर दिया गया है।

इस पहल का उद्देश्य उन्नत डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके टोल प्लाजा पर लगने वाली लंबी कतारों को खत्म करना और यातायात के प्रवाह को बेहतर बनाना है। बैरियर-फ्री टोलिंग मल्टी-लेन फ्री फ्लो टेक्नोलॉजी पर आधारित है। यह गाड़ियों को बिना रुके टोल पॉइंट से गुजरने की सुविधा देती है। पारंपरिक टोल प्लाजा पर जहां फिजिकल बैरियर होते हैं वहीं यह सिस्टम सेंसर और कैमरों से लैस ओवरहेड फ्रेम का इस्तेमाल करता है, ताकि गाड़ियों की अपने-आप पहचान हो सके और टोल शुल्क रियल टाइम में काट लिया जाए। इसकी शुरुआत की घोषणा लॉजिस्टिक्स शक्ति समिट एंड अवार्ड्स 2026 में की गई, जहां केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने भारत के राजमार्ग इंफ्रास्ट्रक्चर को आधुनिक बनाने और लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने में इसकी भूमिका पर जोर दिया।

फास्टैग और एआई कैमरों की बड़ी भूमिका

यह सिस्टम फास्टैग को ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन टेक्नोलॉजी के साथ जोड़ता है। हाई–परफॉर्मेंस वाले एआई कैमरे गाड़ियों की नंबर प्लेट पढ़ते हैं, जबकि राफिड रीडर फास्टैग स्टिकर को स्कैन करते हैं। इसके बाद टोल की रकम सीधे लिंक्ड अकाउंट से काट ली जाती है। यह दोहरी–सत्यापन प्रणाली सटीकता सुनिश्चित करती है और त्रुटियों को कम करती है। जिन मामलों में फास्टैग निष्क्रिय या गायब होता है, वहां भी वाहन की पहचान उसकी नंबर प्लेट के माध्यम से की जा सकती है, जिससे प्रवर्तन की निरंतरता बनी रहती है।

आंधी-बारिश का 'कहर'

32 लोगों की मौत

● यूपी-बिहार और कर्नाटक में हुई भीषण तबाही ● हिमाचल में ग्लेशियर टूटकर सड़क पर आ गिरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले 15 दिन से भीषण गर्मी झेल चुके देश के बड़े हिस्से में गुरुवार को तेज हवाओं के साथ बारिश से कुछ राहत मिली। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, झारखंड में आंधी-बारिश और ओले गिरने से तापमान में 3-5 डिग्री तक की गिरावट हुई। यूपी में गुरुवार को पिछले दो दिनों के दौरान आंधी-बारिश से 17 लोगों की मौत हो गई। बिहार में भी 5 लोगों की मौत हुई है। कर्नाटक के बेंगलुरु में बुधवार रात तेज बारिश और आंधी के दौरान हुई अलग-अलग घटनाओं में मरने वालों की संख्या 10 हो गई है। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले के चुराह में गुरुवार को पहाड़ से ग्लेशियर टूटकर अचानक सड़क पर गिर गया। इस दौरान वहां सड़क से बर्फ हटाने में जुटे कर्मचारी और मजदूरों ने भागकर किसी तरह जान बचाई। हालांकि, राजस्थान और महाराष्ट्र में गर्मी से कोई

राहत नहीं मिली है। गुरुवार को महाराष्ट्र का चंद्रपुर देश में सबसे गर्म जगह रही। यहां तापमान 44.6 डिग्री दर्ज हुआ। राजस्थान के बाड़मेर और जैसलमेर में 44 डिग्री तापमान रहा। दिल्ली में गुरुवार को कई इलाकों में बारिश, तेज हवा और ओले गिरे। इससे तापमान 8 से 15 डिग्री तक गिर गया। पालम में तापमान 39 से गिरकर 28 डिग्री हो गया। मौसम विभाग ने बताया कि दिल्ली में इस साल अप्रैल के दौरान 18 साल में सबसे ज्यादा 27.9 मिमी बारिश हुई। इससे पहले अप्रैल 2008 में 38.6 मिमी बारिश दर्ज की गई थी।

थाने में पेश होना होगा, बिना अनुमति देश नहीं छोड़ेंगे

● पवन खेड़ा को शर्तों के साथ मिल पाई अग्रिम जमानत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को सुप्रीम कोर्ट से अग्रिम जमानत मिल गई है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को निर्देश दिया कि, वे जांच में सहयोग करें और बुलाए जाने पर थाने में पेश होंगे, साथ ही सबूतों को प्रभावित करने या उनके साथ छेड़छाड़ करने से बचेंगे। मालूम हो कि कांग्रेस नेता पवन खेड़ा पर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की पत्नी, रिंकी भुइयां सरमा के खिलाफ कथित तौर पर अपमानजनक टिप्पणी करने के आरोप लगे है।

देश छोड़कर नहीं जा सकते कांग्रेस नेता पवन खेड़ा– कोर्ट ने खेड़ा को यह भी बताया कि, वे कोर्ट की अनुमति के बिना देश छोड़कर नहीं जा सकते। सुप्रीम कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट को यह अनुमति भी दी कि, अगर जरूरत हो तो वह इन शर्तों में और शर्तें जोड़ सकते हैं, साथ ही निर्देश दिया कि जमानत की सुनवाई में पेश किए गए दस्तावेजों या तथ्यों पर ध्यान न दें। बता दें कि, गुरुवार को दोनों पक्षों की ओर से तीखी टिप्पणियों से भरी सुनवाई के बाद कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। खेड़ा की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने इसे एक अभूतपूर्व मामला बताया था और मुख्यमंत्री के लिए व्यंग्यात्मक रूप से अभियोजक के बॉस के बॉस के बॉस जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था। यह संदर्भ सरमा की उन टिप्पणियों के लिए था, जिन्हें सिंघवी ने कोर्ट में दोहराने से इनकार कर दिया था, उन्होंने उन्हें अप्रकाशनीय बताया।

हर दिन 100 उड़ानें रद्द करेगी एयर इंडिया!

● महंगा ईंधन और पाकिस्तान की वजह से आया संकट

नई दिल्ली (एजेंसी)। आसमान छूती जेट ईंधन की कीमतों और पाकिस्तानी एयरस्पेस बंद होने के कारण एयर इंडिया हर दिन 100 उड़ानें रद्द करने जा रही है। जानिए इस फैसले का आपकी अमेरिका-यूरोप यात्रा पर क्या असर पड़ेगा। विमानन ईंधन यानी एविएशन टर्बाइन फ्यूल की आसमान छूती कीमतों के कारण एयरलाइंस पर अपनी सेवाओं को सीमित करने का भारी दबाव है। इसी के चलते देश की प्रमुख एयरलाइन एयर इंडिया अपनी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर रोजाना लगभग 100 उड़ानों में कटौती करने जा रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, एयर इंडिया वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 1100 उड़ानें संचालित करती है। 100 उड़ानों की कटौती का सबसे भारी असर जून महीने में यूरोप, उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर जाने वाली अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर देखने को मिलेगा।

चुनाव के बाद राहत नहीं, महंगाई की मार मिली है लोगों को : जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने देश में लगातार बढ़ती महंगाई, गैस सिलेंडर की कीमतों तथा आम जनता पर पड़ रहे आर्थिक बोझ को लेकर केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय जनता से बड़े-बड़े वादे किए गए थे और नारा दिया गया था - 'बहुत हुई महंगाई की मार, अबकी बार मोदी सरकार', लेकिन आज वही सरकार महंगाई को चरम पर पहुंचाने का काम कर रही है। पटवारी ने कहा कि फरवरी माह से अब तक व्यावसायिक गैस सिलेंडर के दामों में रू. 1,380 तक की बढ़ोतरी हुई है, जो केवल तीन महीनों में लगभग 81 प्रतिशत की वृद्धि है। इतनी कम अवधि में इतनी बड़ी वृद्धि यह दर्शाती है कि केंद्र सरकार महंगाई नियंत्रित करने में पूरी तरह विफल रही है।

पटवारी ने कहा कि जिन गैस सिलेंडरों की कीमतें पहले रू. 400, रू. 450, रू. 700 और रू. 800 के आसपास थीं, आज आम जनता रसोई गैस और व्यावसायिक गैस दोनों की महंगाई से त्रस्त है। उज्ज्वला योजना के नाम पर घर-घर उजाला देने की बात कही गई थी, लेकिन अब गैस सिलेंडर की बढ़ती कीमतों ने गरीब और मध्यम वर्ग के घरों का बजट बिगाड़ दिया है।

उन्होंने कहा कि व्यावसायिक गैस सिलेंडर रू. 3071 होने से सीधा असर आम आदमी की जेब पर पड़ रहा है। होटल, ढाबों और छोटे व्यापारियों पर लागत बढ़ गई है, जिसका बोझ अब जनता को महंगे खाने-पीने के सामान के रूप में उठाना पड़ रहा है। जो समोसा पहले रू. 10 में मिलता था, आज रू. 20 में मिल रहा है। यही हाल चाय, नाश्ते और रोजमर्रा के अन्य सामानों का है।

श्री पटवारी ने कहा कि देश में बेरोजगारी, महंगाई और आर्थिक संकट ने भयावह स्थिति पैदा कर दी है। युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा, व्यापार कमजोर हो रहा है और आम जनता महंगाई की मार से परेशान है।

● पहली बार दिया अभूतपूर्व ऑफर, निशाने पर है चीन

भारत को हिंद का 'रक्षक' बनाना चाहता है जापान

टोक्यो (एजेंसी)। जापान की सरकार ने एक बड़ा फैसला लेते हुए भारत को मोगामी क्लास के युद्धपोत का ऑफर दिया है। जापान चाहता है कि उसकी तकनीकी मदद से भारत इस 50 करोड़ डॉलर के युद्धपोत को खुद से बनाए। यही नहीं जापान ने इस अपने सबसे घातक युद्धपोत को ऑस्ट्रेलिया को भी देना चाहता है। इन तीनों ही देशों का एक ही शत्रु है। वह है चीन। विश्लेषकों का कहना है कि अब तक रक्षात्मक रणनीति अपनाने वाला जापान अब खुलकर चीनी दादागिरी से निपटने में जुट गया है। इसी वजह से जापान ने भारत की नौसेना को यह अभूतपूर्व ऑफर दिया है। जापान चाहता है कि भारत हिंद महासागर में सुरक्षा मुहैया कराए।

यही नहीं भारतीय नौसेना भी इस जापानी युद्धपोत की मुरीद है। विश्लेषकों का कहना है कि अगर भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया तीनों ही इस मोगामी क्लास के युद्धपोत का

इस्तेमाल करते हैं तो इससे वे एक-दूसरे के पोर्ट पर इन्हें मरम्मत भी आसानी से कर सकेंगे।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी ड्रैगन की नौसेना फुफकार रही है। चीन के युद्धपोत लगातार हिंद महासागर के रास्ते अफ्रीका के जिबूती तक चक्कर लगा रहे हैं। चीन की सबमरीन भी हिंद महासागर में आने लगी हैं। ऐसे में तीनों ही देशों के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है। यह वही इलाका है जहां से जापान का ज्यादातर तेल गुजरता है। साथ ही दुनिया का सबसे व्यस्त व्यापारिक मार्ग मलक्का स्ट्रेट भी यही पर है।

रूस से निर्भरता को घटा रहा है भारत

रिपोर्ट के मुताबिक भारत चाहता है कि उसकी आयात पर से निर्भरता कम हो जाए। भारत अपनी रूस पर से भी निर्भरता को कम करना चाहता है और इसी वजह से उसने हाल के वर्षों में फ्रांस, अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों से हथियारों का आयात बढ़ा रहा है। जैन ने बताया कि अभी आधिकारिक रूप से जापान ने अपना पूरा ऑफर नहीं दिया है। जेएनयू में जापानी अध्ययन के प्रोफेसर स्राबनी रॉय चौधरी ने कहा कि भारत की तटीय रेखा बहुत लंबी है। भारत को बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर तक अपने तटों की सुरक्षा करनी होती है। यह जापान के मुक्त और स्वतंत्र हिंद प्रशांत की संकल्पना के हिसाब से प्रासंगिक है।

भारत दे हिंद महासागर में सुरक्षा जापान का प्लान

इससे भारत को यह फायदा होगा कि वह इस अत्याधुनिक युद्धपोत को अपने यहां बना सकेगा। इससे भारतीय नौसेना की ताकत इतना ज्यादा बढ़ जाएगी कि वह आसानी से हिंद महासागर में सुरक्षा देने वाली हो जाएगी। जापान ने जो अपना ऑफर दिया है, उसमें मोगामी युद्धपोत का डिजाइन और उसे भारतीय शिपयार्ड में जापानी मटेरियल की मदद से बनाने में मदद करना शामिल है। एक मोगामी क्लास के युद्धपोत को बनाने में 50 करोड़ डॉलर का खर्च आएगा। इसे एंटी शिप और एंटी एयरक्राफ्ट मिसाइलों तथा टारपीडो की मदद से लैस किया जा सकता है। ऐसा पहली बार है जब जापान ने भारत को अपना कोई बहुत महत्वपूर्ण हथियार सिस्टम ऑफर किया है। विश्लेषकों का कहना है कि यह ऑफर दिखाता है कि जापान रक्षा क्षेत्र में ज्यादा करीबी भागीदारी चाहता है।

हीरानगर में युवक की चाकू मारकर हत्या

इंदौर। हीरानगर इलाके में गुरुवार रात एक 22 वर्षीय युवक की चाकू मारकर हत्या से सनसनी फैल गई। मृतक मनीष (पिता कालू) डेकोरेशन का काम करता था। घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल है, वहीं पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में दो अलग-अलग कहानियां सामने आई हैं। परिजनों और दोस्तों के मुताबिक मनीष खाना खाने के बाद चौराहे पर पाउच लेने गया था। वहां दो पक्षों के बीच झगड़ा हो रहा था। मनीष बीच बचाव करने पहुंचा तो कृष्णा परिहार, मयूर यादव और उनके साथियों ने उस पर चाकू से हमला कर दिया। हमले में उसके पैर की नस कट गई और अधिक खून बहने से उसकी मौत हो गई। वहीं पुलिस का कहना है कि मनीष अपने दोस्तों के साथ एक युवक के घर शराब पार्टी में मौजूद था। इसी दौरान विवाद हुआ और बीच बचाव में मनीष पर हमला किया गया। पुलिस ने बताया कि आरोपी कृष्णा और मयूर के खिलाफ पहले भी आपराधिक मामले दर्ज हैं। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

सड़क पर युवतियों का हंगामा, युवक को पीटा

इंदौर। एरोड्रम रोड के नजदीक का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इसमें कुछ युवतियों ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एक युवक की बुरी तरह से पिटाई कर दी। पुलिस ने अभी तक इस वीडियो को लेकर कोई पुष्टि नहीं की है। वायरल वीडियो में युवतियां यहां बाइक और एक्टिवा से पहुंची थी। उन्होंने देखते ही देखते एक युवक को पीटना शुरू कर दिया। सड़क पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। लोगों ने उन्हे बचाने का प्रयास किया तो युवतियां उनके साथ हुज्जत करने लगे। घटना के दौरान एक युवक वीडियो बना रहा था, जिस पर युवतियां भड़क गईं। आरोप है कि उन्होंने युवक के साथ बदसलूकी की और उसका मोबाइल छीनने की कोशिश की। वहां चाय की दुकान चलाने वाले संचालक को भी अपशब्द कहे। मामला सामने आने के बाद पुलिस वीडियो के आधार पर जांच में जुट गई है। संबंधित युवतियों की पहचान कर उनके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की तैयारी की जा रही है।

कार से 5 लाख की अवैध शराब जब्त

इंदौर। शहर में अवैध शराब के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत राजेंद्र नगर पुलिस को सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने करीब 5 लाख रुपए मूल्य की अवैध अंग्रेजी शराब के साथ एक क्रेटा कार जब्त की है। पुलिस आयुक्त संतोष सिंह के निर्देश पर शहर में अवैध गतिविधियों पर सख्ती बढ़ाई गई है। इसी क्रम में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त आर.के. सिंह और पुलिस उपायुक्त कृष्ण लालचंदानी के मार्गदर्शन में थाना राजेंद्र नगर पुलिस को सघन चेकिंग के निर्देश दिए गए थे। बुधवार को केट चौराहे पर वाहन चेकिंग के दौरान पुलिस को एक संदिग्ध क्रेटा कार दिखाई दी। पुलिस को देखकर ड्राइवर मौके से फरार हो गया। जब टीम ने कार की तलाशी ली तो उसमें से 43 पेटी अवैध अंग्रेजी शराब बरामद हुई,जिसकी अनुमानित कीमत 4 लाख 95 हजार 744 रुपए बताई जा रही है। पुलिस ने शराब और वाहन को जब्त कर लिया है। फिलहाल शराब के स्रोत और फरार आरोपी की तलाश की जा रही है। मामले में आगे की कार्रवाई जारी है। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी यशवंत बडोले के नेतृत्व में पुलिस टीम ने अहम भूमिका निभाई, जिसमें उपनिरीक्षक प्रदीप यादव,प्रदीप सोलंकी सहित अन्य जवान शामिल रहे।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म, एक गिरफ्तार

इंदौर। शहर में शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। इस मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि दूसरे की तलाश में लगातार दबिश दी जा रही है। पुलिस के अनुसार, पीड़िता ने जूनी इंदौर थाने में शिकायत दर्ज कराई है कि दो सगे भाइयों कृष और अरिहंत ने उसे शादी का भरोसा दिलाकर दुष्कर्म किया। पीड़िता अन्य जिले की रहने वाली है और इंदौर में पढ़ाई के लिए आई थी। इसी दौरान उसकी पहचान पहले कृष से हुई, जिसने उससे 1.20 लाख रुपए लेकर अचानक शहर छोड़ दिया। काफी तलाश के बाद पीड़िता ने उसके बड़े भाई अरिहंत से संपर्क किया, जिसने रुपए वापस दिलवा दिए। इसी दौरान उसने भी शादी का झांसा देकर पीड़िता के साथ दुष्कर्म किया। बाद में दोनों भाइयों ने शादी से इनकार कर दिया। शिकायत के आधार पर पुलिस ने अरिहंत को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि कृष की तलाश जारी है। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि जल्द ही दूसरे आरोपी को भी पकड़ लिया जाएगा।

तेज रफ्तार डंपर ने मां-बेटे को कुचला

इंदौर। सांवेर-चंद्रावतीगंज रोड पर गुरुवार को तेज रफ्तार का खौफनाक मंजर देखने को मिला, जहां एक बेकाबू डंपर ने बाइक सवार मां-बेटे को कुचल दिया। हादसे में दोनों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, देपालपुर क्षेत्र के जलोदिया ज्ञान के पास नयाखेड़ा गांव निवासी असलम (32) और उनकी मां मलका बी बाइक से जा रहे थे,तभी तेज रफ्तार डंपर ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों डंपर के नीचे फंस गए। सूचना मिलते ही सांवेर पुलिस मौके पर पहुंची और क्रेन की मदद से रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। करीब दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद शवों को बाहर निकाला जा सका। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई और माहौल गमगीन हो गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर डंपर चालक की तलाश शुरू कर दी है। हादसे ने एक बार फिर तेज रफ्तार और लापरवाही पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

हाई प्रोफाइल विवाद में ट्विस्ट, अग्रिम जमानत खारिज हुई

एक साल से चल रहा पारिवारिक विवाद, पुलिस का शिकंजा कसा

इंदौर। लसूड़िया थाना क्षेत्र स्थित बांबे हॉस्पिटल के पीछे शांति निकेतन कॉलोनी में चल रहे हाईप्रोफाइल पारिवारिक विवाद ने अब नया मोड़ ले लिया है। मामले में फरार आरोपी अंकित जायसवाल और उसके साथी दिनेश को अदालत से बड़ा झटका लगा है। दोनों ने गिरफ्तारी से बचने के लिए अग्रिम जमानत की अर्जी लगाई थी, जिसे निचली अदालत ने सख्ती के साथ खारिज कर दिया। पीड़िता रुचि की शिकायत पर पुलिस ने अंकित जायसवाल, दिनेश और अन्य के खिलाफ नामजद एफआईआर दर्ज की है। आरोप है कि आरोपियों ने महिला का पीछा किया और उसे जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता का कहना है कि उसे कई बार रास्ते में रोका गया और विजय नगर थाने के सामने भी धमकाया गया, जिससे बचने के लिए उसे बस में छिपकर भागना पड़ा। पुलिस के अनुसार शांति निकेतन कॉलोनी स्थित मकान को लेकर पिछले एक साल से विवाद चल रहा है और मामला न्यायालय में लंबित है। जमानत अर्जी खारिज होने के बाद अब आरोपियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दोनों आरोपी फिलहाल फरार है और पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दे रही है। अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही आरोपियों को पकड़ लिया जाएगा।

शहर की यातायात व्यवस्था बदहाल, पर पुलिस के लिए हेलमेट पहनना अनिवार्य

इंदौर। देश का सबसे स्वच्छ शहर आज एक गंभीर विरोधाभास से जूझ रहा है। एक तरफ शहर विकास की नई ऊंचाइयों को छूने का दावा करता है, वहीं दूसरी तरफ इसकी सड़कों पर रेंगता हुआ ट्रैफिक और धूल-धुएं के गुबार एक अलग ही कहानी बयां करते हैं। वर्तमान में इंदौर की यातायात पुलिस और प्रशासन का पूरा ध्यान केवल 'हेलमेट' पर केंद्रित हो गया है, जबकि शहर की बुनियादी समस्याएं जैसे टूटी सड़कें, जलभराव, और अनियंत्रित ट्रैफिक जाम हाशिए पर हैं। शहर के लगभग हर प्रमुख चौराहे पर आज यातायात व्यवस्था सुधारने के बजाय पुलिस बल का जमावड़ा केवल चालान काटने के लिए दिखाई देता है। यह स्थिति तब है, जब शहर के बाईपास और मुख्य मार्ग जर्जर अवस्था में हैं।

सड़कों पर मौजूद जानलेवा गड्ढे आए दिन दुर्घटनाओं को न्योता देते हैं, लेकिन प्रशासन की प्राथमिकता इन गड्ढों को भरने के बजाय दुपहिया वाहन चालकों के सिर पर हेलमेट की जांच करना है। जनता के बीच यह धारणा बलवती हो रही है कि नियम केवल राजस्व वसूली का जरिया बनकर रह गए हैं, सुरक्षा का नहीं। ड्रेनेज सिस्टम की बदहाली और भ्रष्टाचार के कारण मामूली बारिश में भी सड़कें तालाब बन जाती हैं। घंटों तक ट्रैफिक जाम में फंसे रहना इंदौर वासियों की नियति बन चुका है। पार्किंग की कोई ठोस व्यवस्था न होने के कारण लोग सड़कों पर वाहन खड़े करने को मजबूर हैं, जिससे जाम की समस्या और विकराल हो जाती है। लेकिन प्रशासन का तंत्र इन बुनियादी ढांचागत कमियों को सुधारने के बजाय केवल दंडात्मक कार्रवाई में व्यस्त है। सड़क चौड़ीकरण के नाम पर एक ही मार्ग को बार-बार खोदना और महीनों तक उसे अधूरा छोड़ देना भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन का जीवंत उदाहरण है। इसके अतिरिक्त, शहर में बढ़ती नशाखोरी और असुरक्षा जैसे गंभीर सामाजिक मुद्दों पर जो तत्परता दिखनी चाहिए, वह नदारद है। नेताओं और रसूखदारों का काफिला जब सड़कों से गुजरता है, तो आम जनता को रोक दिया जाता है।

ट्रैफिक पुलिस हेलमेट न लगाने वाले वाहन चालकों के चालान बनाने में लगी

जमीनी हकीकत से कटे हुए ये जनप्रतिनिधि शायद यह समझ ही नहीं पा रहे कि एक आम आदमी के लिए टूटी सड़क पर हेलमेट पहनकर धूल फांकना कितनी बड़ी मजबूरी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इंदौर को केवल हेलमेट पहनने वाले नागरिकों की नहीं, बल्कि एक जवाबदेह और दूरदर्शी प्रशासनिक व्यवस्था की आवश्यकता है। जब तक सड़कों की हालत नहीं सुधरती, अवैध पार्किंग पर लगाम नहीं लगती और भ्रष्टाचार मुक्त बुनियादी ढांचे का निर्माण नहीं होता, तब तक केवल हेलमेट के नाम पर की जा रही सख्ती जनता के घावों पर नमक छिड़कने जैसा ही है। शहर के बुद्धिजीवियों की खामोशी और प्रशासन की जिद ने इंदौर की यातायात व्यवस्था को एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां नियम सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि प्रताड़ना का प्रतीक महसूस होने लगे हैं।

तीन दिन में पारा 3 डिग्री गिरा, शहर के लोगों को तपिश से मिली राहत

राजस्थान के बदले मौसमी प्रभाव से थमी लू, सतर्कता की सलाह

इंदौर। भीषण गर्मी से जूझ रहे लोगों को अब कुछ राहत महसूस होने लगी है। पिछले तीन दिनों के भीतर तापमान में करीब 3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई है, जिससे तेज तपिश का असर कुछ कम हुआ है। मौसम में यह बदलाव पड़ोसी राज्य राजस्थान में बने नए मौसमीय तंत्र के कारण माना जा रहा है, जिसने गर्म हवाओं की गति को धीमा कर दिया है। रविवार को जहां शहर का अधिकतम तापमान 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, वहीं लगातार गिरावट के बाद बुधवार को यह घटकर 40.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यह सामान्य तापमान से लगभग 1 डिग्री कम है। दिन में तेज धूप अब भी बनी हुई है, लेकिन लू के तीखे थपेड़ों से लोगों को काफी हद तक राहत मिली है। सड़कों और बाजारों में दोपहर के समय पहले जैसी वीरानी अब कुछ कम देखने को मिल रही है। मौसम में आए इस बदलाव ने भले ही थोड़ी राहत दी हो, लेकिन गर्मी का असर अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है।

रात के तापमान में उतार-चढ़ाव

दिन के तापमान में गिरावट के विपरीत रात के तापमान में उतार-चढ़ाव जारी है। मंगलवार को न्यूनतम तापमान 23.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था, जो बुधवार को बढ़कर 25.2 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। यह सामान्य से करीब 2 डिग्री अधिक है, जिससे रात में उमस का एहसास बना हुआ है। मौसम विभाग के

अनुसार गुरुवार को भी दिन के तापमान में हल्की गिरावट की संभावना बनी हुई है, जिससे राहत का क्रम कुछ और दिनों तक जारी रह सकता है।

स्वास्थ्य विभाग की चेतावनी

मौसम में आई इस राहत के बावजूद स्वास्थ्य विभाग ने लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ माधव प्रसाद हसानी के अनुसार, गर्मी और लू का असर अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। विशेष रूप से बुजुर्ग, छोटे बच्चे, खिलाड़ी और खुले में काम करने वाले श्रमिक अभी भी जोखिम में हैं। उन्होंने बताया कि लू के दौरान शरीर में कई गंभीर लक्षण दिखाई दे सकते हैं, जिनमें पसीना बंद हो जाना, त्वचा का असामान्य रूप से गर्म और सूखा हो जाना, चक्कर आना, उल्टी, तेज सिरदर्द और बेहोशी शामिल हैं। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत नजदीकी अस्पताल में संपर्क करना आवश्यक है, क्योंकि देरी स्थिति को गंभीर बना सकती है।

बचाव ही सबसे बेहतर उपाय

विशेषज्ञों का कहना है कि मौसम में हल्की राहत को देखते हुए भी सावधानी कम नहीं करनी चाहिए। शरीर में पानी की कमी न होने दें और नियमित रूप से तरल पदार्थों का सेवन करते रहें। खाली पेट बाहर निकलने से बचें, क्योंकि इससे कमजोरी और चक्कर आने की आशंका बढ़ जाती है। तेज धूप से बचाव के लिए हल्के रंग के ढीले कपड़े पहनना, सिर को कपड़े या टोपी से ढकना जरूरी है। दोपहर 12 बजे से 4 बजे के बीच अनावश्यक बाहर निकलने से बचना चाहिए। यदि बाहर जाना जरूरी हो तो छाता, धूप का चश्मा और पानी साथ रखें। ओआरएस घोल, नारियल पानी, छाछ और नींबू पानी जैसे पेय शरीर को ठंडक देने के साथ ऊर्जा भी बनाए रखते हैं। ऐसे में सतर्कता और सावधानी ही स्वस्थ रहने का सबसे कारगर तरीका है।

6 किलो चांदी लेकर फरार नौकर गिरफ्तार, कैमरे से खुली वारदात

इस घटना के बाद व्यापारी सतर्क, सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की

इंदौर। सराफा क्षेत्र में ज्वेलर्स की दुकान से चांदी लेकर फरार हुए कर्मचारी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी अपने साथ करीब 6 किलो चांदी लेकर भागा था, जिसकी कीमत लगभग 15 लाख रुपये बताई जा रही है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए पूरी चांदी बरामद कर ली है, जिससे व्यापारी को बड़ी राहत मिली है। सराफा थाना प्रभारी राजकुमार लिटोरिया के अनुसार, साउथ तुकोगंज निवासी राहुल जैन की सराफा बाजार में सिद्धि विनायक नाम से विहर्ष ज्वेलर्स की दुकान है। उन्होंने फाइन आर्ट के काम के लिए हुकुमचंद कॉलोनी निवासी पंकज, पिता प्रहलाद निमावत से करीब 6 किलो चांदी मंगवाई थी। 8 अप्रैल को जब राहुल जैन कुछ समय के लिए दुकान से बाहर गए हुए थे, उसी दौरान आरोपी पंकज ने मौका देखकर चांदी से भरा बैग उठाया और वहां से फरार हो गया। जब व्यापारी वापस लौटे तो आरोपी का कहीं पता नहीं चला, जिससे उन्हें संदेह हुआ।

कैमरों से खुला राज- घटना के बाद दुकान में लगे निगरानी कैमरों की जांच की गई, जिसमें आरोपी पंकज बैग लेकर जाते हुए स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। इसके आधार पर राहुल जैन ने सराफा थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने 15 अप्रैल को मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की। लगातार दबिश और जानकारी जुटाने के बाद पुलिस को सफलता मिली और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

बरामद हुई पूरी चांदी

गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने आरोपी के कब्जे से पूरी 6 किलो चांदी बरामद कर ली है। पूछताछ में यह भी जानकारी जुटाई जा रही है कि आरोपी ने वारदात की पहले से योजना बनाई थी या मौके का फायदा उठाया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले में अन्य पहलुओं की भी जांच की जा रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि आरोपी के साथ कोई और व्यक्ति शामिल था या नहीं। फिलहाल आरोपी से पूछताछ जारी है और उसे न्यायालय में पेश करने की तैयारी की जा रही है। इस घटना के बाद सराफा क्षेत्र के व्यापारियों में सतर्कता बढ़ गई है और वे अपने यहां सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने पर जोर दे रहे हैं।

हाईकोर्ट में नौकरी का झांसा, फर्जी जॉइनिंग लेटर से 25 हजार की ठगी

इंदौर। तुकोगंज थाना क्षेत्र में हाईकोर्ट में सहायक क्लर्क की नौकरी दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। एक जालसाज ने खुद को हाईकोर्ट का कर्मचारी बताकर महिला से 25 हजार रुपए ठग लिए और फर्जी जॉइनिंग लेटर थमा दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक फरियादी स्वाति बाथम निवासी रास टाउन, तलावली चांदा की मुलाकात फरवरी 2025 में हाईकोर्ट के बाहर लक्ष्मण मेहरा से हुई थी। आरोपी ने दावा किया कि कोर्ट में सहायक क्लर्क की गुप्त भर्ती चल रही है और वह अंदर की जानकारी रखता है। उसने स्वाति को ऑफलाइन फॉर्म देकर 25 हजार रुपए मांगे। भरोसा कर स्वाति ने रकम दे दी। करीब दो महीने बाद आरोपी ने स्वाति के पति सिद्धार्थ को गीता भवन चौराहे पर बुलाकर जॉइनिंग लेटर की कॉपी सौंपी। जब स्वाति उस लेटर के साथ हाईकोर्ट पहुंची तो अधिकारियों ने उसे फर्जी बताया। ठगी का अहसास होने पर पीड़िता ने तुकोगंज थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी और जालसाजी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह के अनुसार आरोपी की तलाश जारी है।

यात्री सुविधाओं में इंदौर हवाई अड्डा पिछड़ा, रैंकिंग में बड़ी गिरावट आई

तीन महीने में 6ठे से 13वें स्थान पर, यात्रियों की नाराजगी वजह

इंदौर। देवी अहिल्याबाई होलकर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अब हवाई सेवाओं के मामले में पिछड़ता नजर आ रहा है। कभी देश के अग्रणी हवाई अड्डों में शामिल रहा यह केंद्र अब अपनी साख बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है। यात्री सुविधाओं में गिरावट के कारण इसकी रैंकिंग में बड़ा झटका लगा है। एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल द्वारा जारी वर्ष 2026 की पहली तिमाही, यानी जनवरी से मार्च की सेवा गुणवत्ता रिपोर्ट में इंदौर हवाई अड्डा 13वें स्थान पर पहुंच गया है। यह गिरावट चौंकाने वाली इसलिए भी है क्योंकि वर्ष 2025 की अंतिम तिमाही में यही हवाई अड्डा देश में छठे स्थान पर था। इस सर्वे में इंदौर को 5 में से केवल 4.87 अंक प्राप्त हुए हैं। वहीं, पुणे हवाई अड्डा 4.96 अंकों के साथ पहले स्थान पर रहा। चेन्नई हवाई अड्डा ने 4.95 अंकों के साथ दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि गोवा हवाई अड्डा 4.94 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा।

वाराणसी और त्रिची के हवाई अड्डे भी इंदौर से आगे रहे। इस गिरावट के पीछे सबसे बड़ा कारण यात्रियों का असंतोष बताया जा रहा है। सर्वे में शामिल 31 मानकों में से 28 पर हवाई अड्डे को बेहद कम अंक मिले हैं। यात्रियों ने साफ-सफाई की स्थिति पर असंतोष जताया। इसके अलावा संचार सुविधा की कमजोरी, मोबाइल चार्जिंग की पर्याप्त व्यवस्था का अभाव और समय बिताने के साधनों की कमी भी प्रमुख शिकायतों में शामिल रही। यात्रियों ने यह भी कहा कि हवाई अड्डे पर स्वास्थ्य सेवाएं पर्याप्त नहीं हैं। भोजनालयों और विश्राम सुविधाओं को लेकर भी निराशा व्यक्त की गई। सुरक्षा जांच में लगे कर्मचारियों के व्यवहार को लेकर भी कई यात्रियों ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। हवाई अड्डे तक पहुंचने वाले मार्ग और दिशा बताने वाले संकेतों की कमी ने भी असुविधा बढ़ाई है।

सुधार भी नहीं ला सके बदलाव

प्रबंधन द्वारा हाल ही में कुछ सुधारात्मक कदम उठाए गए थे। मार्च महीने में उड़ान कैफे की शुरुआत की गई और प्रतीक्षालय का विस्तार भी किया गया, लेकिन ये प्रयास यात्रियों को संतुष्ट करने में सफल नहीं हो सके। इसका सीधा असर सर्वे के अंकों में दिखाई दिया।

छोटे शहरों से भी पीछे - इस खराब प्रदर्शन के कारण इंदौर अब रायपुर, कालीकट, कोयंबत्तूर और भुवनेश्वर जैसे शहरों के हवाई अड्डों से भी पीछे हो गया है। यह स्थिति इंदौर जैसे तेजी से विकसित हो रहे शहर के लिए चिंताजनक मानी जा रही है।

पहले रहा शीर्ष स्थानों में

पिछले रिकॉर्ड पर नजर डालें तो यह गिरावट और भी गंभीर प्रतीत होती है। वर्ष 2025 की वार्षिक रैंकिंग में इंदौर को देश में तीसरा स्थान मिला था और उसे 4.92 अंक प्राप्त हुए थे। उस समय उम्मीद जताई जा रही थी कि वर्ष 2026 में यह हवाई अड्डा शीर्ष स्थान हासिल कर सकता है, लेकिन मौजूदा स्थिति इसके विपरीत है। अब 16 प्रमुख हवाई अड्डों की सूची में इंदौर से नीचे केवल श्रीनगर, पोर्ट ब्लेयर और अमृतसर के हवाई अड्डे ही रह गए हैं। इस तिमाही रिपोर्ट का असर आगामी महीनों और वार्षिक रैंकिंग पर भी पड़ सकता है, जिससे इंदौर की अंतरराष्ट्रीय पहचान पर प्रभाव पड़ने की आशंका जताई जा रही है।

ढाई लाख की रिश्वत में लोक निर्माण विभाग के तीन अधिकारी निलंबित

बिल भुगतान के बदले मांगे थे साढ़े 3 लाख, लोकायुक्त कार्रवाई

इंदौर। लोक निर्माण विभाग में सामने आए रिश्वत प्रकरण में राज्य शासन ने कड़ी कार्रवाई करते हुए तीन अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। यह कदम उस समय उठाया गया जब लोकायुक्त पुलिस की कार्रवाई में अधिकारी रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकड़े गए। शासन स्तर से जारी आदेश के बाद विभाग में हड़कंप की स्थिति बनी हुई है। निलंबित अधिकारियों में कार्यपालन यंत्री जयदेव गौतम, उप संभागीय अधिकारी टीके जैन और उपयंत्री अंशु दुबे शामिल हैं। तीनों पर आरोप है कि उन्होंने निर्माण कार्य के अंतिम भुगतान के बदले ठेकेदार से अवैध राशि की मांग की थी। लोकायुक्त पुलिस ने 21 अप्रैल को योजनाबद्ध तरीके से कार्रवाई करते हुए जयदेव गौतम को पलासिया स्थित शासकीय आवास से डेढ़ लाख रुपए रिश्वत लेते हुए पकड़ा। वहीं टीके जैन को विभागीय कार्यालय परिसर में एक लाख रुपए लेते

हुए गिरफ्तार किया गया। तीसरे आरोपी अंशु दुबे ने भी एक लाख रुपए की मांग की थी, लेकिन तय राशि से कम मिलने के कारण उसने रकम लेने से इनकार कर दिया, जिससे वह मौके पर पकड़ा नहीं गया। इस पूरी कार्रवाई में लोकायुक्त टीम ने पहले शिकायत की पुष्टि की और फिर साक्ष्यों के आधार पर जाल बिछाकर दोनों अधिकारियों को रंगेहाथ गिरफ्तार किया।

ठेकेदार की शिकायत

यह मामला धार जिले के ठेकेदार राजपाल सिंह पवार की शिकायत के बाद सामने आया। पवार, जो पटेल श्री इंटरप्राइजेज के संचालक हैं, ने वर्ष 2023 में करीब 4 करोड़ 73 लाख रुपए की लागत से सड़क निर्माण का कार्य पूरा किया था। काम पूरा होने के बाद जब अंतिम भुगतान का समय आया, तब संबंधित अधिकारियों ने बिल पास करने के एवज में 3 लाख 50 हजार रुपए की रिश्वत की मांग की। ठेकेदार ने इस मांग से परेशान होकर लोकायुक्त पुलिस से संपर्क किया और पूरी जानकारी दी। इसके बाद अधिकारियों की निगरानी शुरू की गई और योजना बनाकर कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

प्रतिवेदन पर कार्रवाई- लोकायुक्त पुलिस अधीक्षक डॉ राजेश सहाय ने पूरे मामले का प्रतिवेदन तैयार कर विभाग को भेजा। उसी के आधार पर राज्य शासन ने तीनों अधिकारियों के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की है। शासन के इस कदम को भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त संदेश के रूप में देखा जा रहा है।

विभाग में बढ़ी सतर्कता- इस घटना के बाद लोक निर्माण विभाग में भी सतर्कता बढ़ा दी गई है। अधिकारियों और कर्मचारियों को स्पष्ट संदेश दिया गया है कि किसी भी प्रकार की अनियमितता या भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं मामले की विस्तृत जांच अभी जारी है, जिसमें यह भी देखा जा रहा है कि कहीं इस प्रकरण में अन्य लोग भी शामिल तो नहीं हैं।

संपादकीय

यूएई: भारत के लिए अच्छी खबर

खाड़ी के देश संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) का तेल उत्पादक देशों के संगठन ओपेक से 1 मई को बाहर हो जाना जहां पश्चिम एशिया की राजनीति को खासा प्रभावित करेगा, वहीं भारत के लिए यह अच्छी खबर हो सकती है, क्योंकि हम अपनी जरूरत का 91 फीसदी तेल आयात करते हैं। इनमें से 54 प्रतिशत आयात मध्य पूर्व के देशों से होता है। यूएई लगातार भारत के प्रमुख कच्चे तेल आपूर्तिकर्ताओं में रहा है। भारत के कुल कच्चे तेल आयात का लगभग 10 प्रतिशत वहीं से आता है। गौरतलब है कि ओपेक एक स्थायी अंतर-सरकारी संगठन है, जिसका मुख्यालय ऑस्ट्रिया के वियना में है। इसका उद्देश्य सदस्य देशों की पेट्रोलियम नीतियों को एकजुट करना और तेल बाजार को स्थिर बनाए रखना है। इसकी स्थापना ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला ने सितंबर 1960 में बग़दाद में की थी। इसके बाद यह 12 देशों का समूह बन गया। ओपेक देश दुनिया के 35 प्रतिशत कच्चे तेल का उत्पादन करते हैं। यह कार्टेल उस समय बना था जब वैश्विक बाज़ार पर 'सेवन सिस्टर्स' नाम की ताकतवर पश्चिमी कंपनियों का दबदबा था। 2016 में ओपेक प्लस का गठन हुआ, जिसमें रूस और बहरीन सहित 10 अतिरिक्त देश शामिल हैं। हालांकि यूएई इस गठबंधन से बाहर होने वाला पहला देश नहीं है। इससे पहले कतर, इंडोनेशिया, इक्वाडोर, अंगोला और गैबॉन भी बाहर हो चुके हैं। ओपेक में यूएई चौथा सबसे बड़ा तेल उत्पादक है और 2024 में वह प्रतिदिन 29.2 लाख बैरल तेल उत्पादन कर रहा था। अब यूएई का संगठन से बाहर होने का अर्थ है कि अब वह तेल उत्पादन पर लगाए गए इस गठबंधन के कोटा सिस्टम से बंधा नहीं रहेगा। साथ ही यूएई 2016 में बने ओपेक प्लस गठबंधन से भी बाहर हो जाएगा। इसमें ओपेक के सभी सदस्य देशों के साथ 10 अतिरिक्त देश शामिल हैं। यूएई के ऊर्जा मंत्रालय द्वारा जारी बयान के मुताबिक उसने यह फ़ैसला 'राष्ट्रीय हितों की जरूरतों को देखते हुए' लिया है। अहम बात यह है कि यूएई ने यह क़दम ऐसे समय उठाया है जब ईरान के साथ युद्ध के कारण तेल का व्यापार ख़ासा प्रभावित हुआ है। जबकि यूएई उसे हर क्षेत्र में चुनौती दे रहा है। विशेषज्ञों के अनुनसार ऊर्जा की बड़ी जरूरत वाले देश भारत के लिए यूएई का इस गठबंधन से बाहर होना 'अच्छी ख़बर' हो सकती है, हालांकि इस पर अंतिम निष्कर्ष निकालना अभी जल्दबाज़ी होगी। संयुक्त अरब अमीरात भारत का मज़बूत साझेदार है। उम्मीद है कि वह अपने कच्चे तेल का उत्पादन बढ़ाकर 50 से 60 लाख बैरल प्रतिदिन तक ले जाएगा। यह हमारे लिए सकारात्मक है, क्योंकि हम रणनीतिक साझेदार भी हैं और कच्चे तेल के उपभोक्ता भी। अब यूएई अपना तेल उत्पादन बढ़ाता है तो दुनिया में कच्चे तेल के दाम गिरेंगे। भारत यदि बल्क मे तेल खरीदता है तो यूएई उसे तगड़ा डिस्काउंट भी दे सकता है। जानकारों के मुताबिक यूएई को वास्तविक लाभ होर्मुज स्ट्रेट खुलने पर ही मिलेगा। इसमें संदेह नहीं कि पश्चिम एशियां में दो माह से चल रहे युद्ध की आंच भारत पर ऊर्जा संकट के रूप में पड़ रही है। विश्व बाजार में क्रूड ऑइल के दाम आसमान छू रहे हैं। भारत ने भी पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पेट्रॅल डीजल के भाव नहीं बढ़ाए थे, लेकिन अब वो कभी भी बढ़ सकते हैं। आरती खोसला ने कहा, 'यह बदलाव भारत को राहत दे सकता है क्योंकि यूएई के साथ हमारी एक व्यापक व्यापारिक साझेदारी है. स्थिर आपूर्ति और कीमतों में कमी के अलावा, यह फिलहाल भारत की ऊर्जा सुरक्षा को लेकर चिंताओं में भी राहत दे सकता है।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
लेखक एनएचआरसी (इण्डिया) में स्पेशल मॉनिटर व केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

लैंगिक समानता से भारत में आएगा बदलाव

लैंगिक समानता एक मूलभूत मानवाधिकार होने के साथ-साथ शांतिपूर्ण समाजों, पूर्ण मानवीय क्षमता और सतत विकास के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, यह सिद्ध हो चुका है कि महिलाओं को सशक्त बनाने से उत्पादकता और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। इसलिए कल्याणकारी देश यह चाहते हैं कि वे अपनी वेलफेयर पॉलिसीज में महिलाओं को केंद्र में रखकर अपने आर्थिक उन्नति को सुनिश्चित करें. संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन-यूएन विमेन की चेतावनी आती रही है कि दुर्भाग्यवश, पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिकारों और अवसरों की पूर्ण समानता प्राप्त करने में अभी लंबा सफर तय करना है। इसलिए, लैंगिक हिंसा के विभिन्न रूपों को समाप्त करना होगा और महिलाओं व लड़कियों तथा पुरुषों व लड़कों दोनों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों और राजनीतिक जीवन में समान भागीदारी सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। रोजगार, नेतृत्व तथा निर्णय लेने के लिए भी सभी स्तरों पर समान अवसर प्राप्त करना भी आवश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसंबर 1948 को अपनाई गई मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के माध्यम से लैंगिक समानता को अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का हिस्सा बनाया गया था। मानवाधिकारों के इतिहास में इस महत्वपूर्ण दस्तावेज़ ने यह स्वीकार किया गया। इसमें कहा गया कि सभी मनुष्य गरिमा और अधिकारों में स्वतंत्र और समान पैदा होते हैं। हर कोई इस घोषणा पत्र में बिना किसी भी प्रकार के भेदभाव के निर्धारित सभी अधिकारों और स्वतंत्रताओं का हकदार है। विश्व की आधी आबादी महिलाओं और लड़कियों की है। इसलिए यह मानकर चलें कि उनकी क्षमता भी संपूर्ण क्षमता की आधी अवश्य है। लैंगिक समानता एक मूलभूत मानवाधिकार होने के साथ-साथ शांतिपूर्ण समाजों, पूर्ण मानवीय क्षमता और सतत विकास के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, यह सिद्ध हो चुका है कि महिलाओं को सशक्त बनाने से उत्पादकता और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। इसलिए कल्याणकारी देश यह चाहते हैं कि वे अपनी वेलफेयर पॉलिसीज में महिलाओं को केंद्र में रखकर अपने आर्थिक उन्नति को सुनिश्चित करें. संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन-यूएन विमेन की चेतावनी आती रही है कि दुर्भाग्यवश, पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिकारों और अवसरों की पूर्ण समानता प्राप्त करने में अभी लंबा सफर तय करना है। इसलिए, लैंगिक हिंसा के विभिन्न रूपों को समाप्त करना होगा और महिलाओं व लड़कियों तथा पुरुषों व लड़कों दोनों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों और राजनीतिक जीवन में समान भागीदारी सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। रोजगार, नेतृत्व तथा निर्णय लेने के लिए भी सभी स्तरों पर समान अवसर प्राप्त करना भी आवश्यक है।

अब अगर वैश्विक लैंगिक समानता पर बात करें तो ऐसे कई आंकड़े और शोध सामने आये हैं जो हमें चिंता में डाल देते हैं। शोध बताते हैं कि इस दिशा में प्रगति बहुत धीमी है. कुछ शोध के निष्कर्ष में ऐसा भी निकल कर आया है कि विश्व में लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति हो रही है। लेकिन सतत विकास लक्ष्य-2030 के हिसाब से देखें तो 2030 तक पूर्ण समानता हासिल करने का लक्ष्य अभी दूर है। वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट 2025 के अनुसार भी वर्तमान गति से समानता पाने में 132 साल लग सकते हैं. भारत 148 देशों में 131वें स्थान पर है। भारत में लैंगिक समानता की दिशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। महिला एवं पुरुष 2025 रिपोर्ट का अवलोकन करें तो अप्रैल 2026 तक के विश्लेषण के अनुसार, 2021-23 में जन्म के समय लिंगानुपात 904 से बढ़कर 917 हो गया है। उच्च शिक्षा में महिलाओं का सकल नामांकन अनुपात बढ़कर 30.2% हो गया है। भारत ने लैंगिक असमानता सूचकांक-जीआईआई 2022 में 14 पायदान की छलांग लगाकर 108वां स्थान हासिल किया है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि महिला सशक्तिकरण भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं को गृहिणी के रूप में देखने के दिन लद गए, हमें महिलाओं को राष्ट्र निर्माता के रूप में देखना होगा। यह भारत

के प्रधान मंत्री की संवेदनशील अभिव्यक्ति भारतीय लैंगिक समानता और उनके समान गरिमा के प्रति बहुत महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। वैसे तो हमारे देश की गृहणी भी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। घर नहीं होंगे। गृहणी नहीं होंगी तो भारतीय सभ्यता उलट-पुलट हो जाएगी जिस पर भारत गर्व करता है। सच तो यह है कि भारत बचा हुआ है अपने गाँव व अपने देसज सभ्यता में तो इसकी वजह हैं हमारे देश की गृहणियां लेकिन प्रधान मंत्री का कहना शायद यह है कि हमारी प्रतिस्पर्धा जिस प्रकार से बदल रही है उसको देखते हुए महिलाएं अगर भारत राष्ट्र के निर्माण में अन्य महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धा में शामिल हों, तो देश की उन्नति बहुत तेजी से होगी। इसलिए प्रधान मंत्री का सन्देश इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में लैंगिक समानता के लिए उचित प्रतिभागिता भी स्त्रियों की ज़रूरी है. बिना उन्हें पर्याप्त अवसर दिए, भारत कोई उन्नति कर ही नहीं सकता।

भारत ने तो डिजिटल संसार में लैंगिक अंतर को समाप्त करने की बात कर रहा है। डिजिटल लैंगिक अंतर को समाप्त करने की भारत की प्रतिबद्धता जी20 सम्मेलन में दिखी और तब से भारतीय नेतृत्व डिजिटल लैंगिक समानता की दिशा में काफी काम किया है। वित्तीय समावेशन को सक्षम करने वाले एक मजबूत डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के साथ, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं के लिए, भारत डिजिटल क्षेत्र में लैंगिक समानता को आगे बढ़ा रहा है। दूरसंचार क्षेत्र विकास प्रत्येक दिन भारत में आधुनिक स्वरूप पा रहा है. ऐसे में, महिलाओं के लिए डिजिटल समावेशन सुनिश्चित करना लैंगिक समानता प्राप्त करने और डिजिटल अर्थव्यवस्था में उनकी पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है। अच्छी बात यह है कि भारत में निति आयोग, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग व विभिन्न मंत्रालयों से अब विशेष पहल हो रही है कि डिजिटल संसार में लैंगिक अंतर शून्य करने की विशेष कोशिश हो। अब ऐसा देखने को मिल भी रहा है कि विभिन्न राज्यों के महिला समुदाय के प्रमुखों, कारीगरों, स्वयं सहायता समूहों, कॉरपोरेट्स तथा व्यावसायिक संस्थाओं में डिजिटल साक्षरता का ग्राफ्स बढ़ा है और हर बाधाओं को दूर करके तेजी से आगे बढ़ने के लिए सभी मन बना चुके हैं।

आज पूरा देश महसूस कर रहा है कि लखपति दीदी पहल एक गेम-चेंजर के रूप में उभरी है। सच तो यह है कि सच्ची सशक्तीकरण की स्थिति गरिमा की सुरक्षा से शुरू होती है। एक सुरक्षित घर, स्वच्छ ईंधन, निजी शौचालय और घर के दरवाजे पर पानी न हो, पढने को स्कूल न हो, सोने के लिए छत न हो, आगे बढ़ने के लिए अवसर न हो तो कोई गरिमा महसूस ही नहीं की जा सकती। गरिमा केवल इन्हीं चीजों से नहीं बनती बल्कि सम्मानजनक जीवन स्तर से बनती है. नरेंद्र मोदी सरकार ने महिलाओं को भारत की विकास यात्रा के केंद्र में रखा है, जिससे दैनंदिन संघर्षों को स्वास्थ्य, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के अवसरों में बदला जा सके। आवास से लेकर स्वच्छता तक, प्रत्येक पहल ने जीवन को ऊपर उठाया है और ग्रामीण भारत में नारी शक्ति की नींव को मजबूत किया है। हमारे देश में सहकारिता से भी बहुत सी महिलाओं का आत्मसम्मान बढ़ा है. इस प्रकार अनेक स्तर से सर्कार तो कोशिश कर रही है कि लैंगिक समानता कायम हो।

हाल ही में मेरे द्वारा तिन राज्यों का दौरा किया गया जहाँ मानव अधिकार शिक्षा व लैंगिक समानता के लिए जमीन तैयार की गयी है। बतौर स्पेशल मॉनिटर, ह्यूमन राइट्स एडवोकेसी-ह्यूमन राइट्स एजुकेशन एंड जेंडर इक्वैलिटी, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (इंडिया) जिन राज्यों का दौरा मैंने किया। बहुत संतोष है कि आने वाले समय में देश के इन राज्यों में मानव अधिकार शिक्षा व लैंगिक समानता को आकार मिलेगा। सभी विजिटेड संस्थानों ने आश्वस्त किया है कि लैंगिक समानता के लिए, मानव अधिकार शिक्षा के लिए विविध प्रयास करेंगे। यह एक बदलाव है. यह एक विशेष परिवर्तन संयुक्त राष्ट्र की पहल में भी शामिल हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था-यूएन विमेन ने केन्द्र और प्रान्तीय सरकारों के साथ मिलकर, लैंगिक उत्तरदाई बजट व्यवस्था पर लगातार काम किया है। इसका उद्देश्य सार्वजनिक व्यय को लैंगिक दृष्टि से बेहतर ढंग से समझना और परखना है। आज यह व्यवस्था केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि महिलाओं और लड़कियों के लिए अधिक न्याय और ज़वाबदेही का एक महत्वपूर्ण रास्ता बन गई है। अब जब भारत में इस प्रकार के इनिशिएटिव होंगे तो देश में लैंगिक समानता के लिए काफी सभावनाएं दिख रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इसे गति प्रदान किया जाए और बदलाव की जिद भी कायम रहे।

मज़दूर आंदोलन

अरुण कुमार डनायक
लेखक समाजसेवी हैं।

वेतन से आगे, सामाजिक न्याय की लड़ाई

मज़दूर दिवस पर श्रमिक आंदोलनों की चर्चा अक्सर फ़ैक्टरी गेट पर विरोध, नारेबाज़ी, अतिआवश्यक सेवाओं को ठप कर देने या हड़तालों की हिंसक छवियों, शहरों के उद्योग बंद होने की कहानियों तक सीमित रह जाती है। यह दृष्टि उस बड़े सत्य को अनदेखा कर देती है कि दुनिया के मजदूर केवल अपने अधिकारों के लिए ही नहीं, बल्कि देशहित, लोकतंत्र और मानव गरिमा की रक्षा के लिए भी निर्णायक भूमिका निभाते रहे हैं । भारत में भी श्रमिक वर्ग ने यह भूमिका निभाई। चम्पारण सत्याग्रह में खेतिहर मजदूर नील किसानों के साथ खड़े रहे; 1918 में अहमदाबाद, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई की मिल हड़ताल और दांडी यात्रा में कारीगरों, नमकनिर्माताओं और तटीय मजदूरों ने औपनिवेशिक अन्याय के विरुद्ध व्यापक जनशक्ति खड़ी कर मजदूरों की सामूहिक शक्ति प्रदर्शित की । डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में महाड़ के चवदार तालाब सत्याग्रह में दलित श्रमिकों ने सामाजिक समानता की लड़ाई को नई दिशा दी।

इसी वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अमेरिका का नागरिक अधिकार आंदोलन एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। 'जिमक्रो नियमों के तहत अमेरिका में अश्वेत नागरिकों को 'अलग लेकिन समान' के नाम पर अपमानजनक भेदभाव का सामना करना पड़ता था। सार्वजनिक सुविधाएँ—जैसे बस, ट्रेन, पार्क, स्कूल में व्यवस्थाएँ अलग-अलग थीं, और मतदान में बाधा डालने के लिए साक्षरता परीक्षण व 'पोल टैक्स' जैसे उपाय थे। इन असमानताओं के विरुद्ध 1950-60 के मध्य व्यापक जनांदोलन उभरे, जिनमें श्वेत और अश्वेत सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ-साथ अश्वेत श्रमिकों ने अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर संघर्ष को दिशा दी ।'

इन आंदोलनों की रीढ़ घरेलू कामगार, औद्योगिक श्रमिक और उनके संगठन थे, जिन्होंने हर स्तर पर संघर्ष को जीवित रखा। ग्रामीण इलाकों में हिंसा और दमन के बावजूद खेतिहर मजदूरों व बटाईदार कृषकों ने यूनियनें बनाईं और 'फ्रीडम समर' जैसे अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाई। इन सबके बीच पादरी मार्टिन लूथर किंग जूनियर इस आंदोलन के सबसे प्रेरक और नैतिक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरे । उन्होंने महात्मा गांधी की अहिंसा, सविनय अवज्ञाभंग आंदोलन व सत्याग्रह से प्रेरित होकर श्रमिक वर्ग की शक्ति को संगठित कर संघर्ष को राष्ट्रीय स्वरूप दिया।

1 दिसंबर 1955 को एक साधारण कामकाजी महिला, रोज़ा पार्क्स द्वारा मॉन्टगोमरी की बस में श्वेत अमेरकी नागरिक के लिए अपनी सीट छोड़ने से इनकार करना अचानक उपजा विद्रोह नहीं था। यह वर्षों से सहते आ रहे अपमान के विरुद्ध एक शांत, पर निर्णायक प्रतिकार था। उनकी गिरफ्तारी ने अश्वेत समाज को झकझोर दिया और 381 दिनों तक चलने वाले मॉन्टगोमरी बस बहिष्कार की शुरुआत हुई। इस बहिष्कार की असली ताकत घरेलू कामगार महिलाएँ, औद्योगिक श्रमिक, खेतिहर मजदूर और निम्नआय वर्ग के वे लोग थे, जो रोज़मर्रा के आवागमन के लिए इन्हीं बसों पर निर्भर थे—और बहिष्कार का सबसे बड़ा बोझ भी इन्हीं ने अपने कंधों पर उठाया। लोग मीलों पैदल चले, चर्चों की वैनें चलीं, कारपूल बने, टैक्सी चालकों ने कम किराए पर यात्राएँ कराईं। सुबह अँधेरे में निकलने वाली घरेलू कामगार महिलाएँ और मजदूर , लंबी दूरी पैदल चलने की कठिनाइयों के बावजूद डटे रहे।

दूसरी ओर श्वेत प्रतिरोध लगातार हिंसक होता गया— किंग के घर पर बम फेंके गए, कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर जेलों में प्रताड़ित किया गया, और आंदोलनकारियों को निरंतर धमकियाँ दी गईं। इसके बावजूद आंदोलन की आत्मा गांधी जी की अहिंसा के अनुरूप ही रही; जेल की कोठरियों और सड़कों पर 'वी शैल ओवरकम' जैसे आशाभरे गीत गूँजते रहे। मनुष्य की गरिमा और समानता का प्रतीक यह गीत आगे चलकर भारत में 'हम होंगे कामयाब एक दिन' के रूप में लोकप्रिय हुआ।

मॉन्टगोमरी बस आंदोलन की श्रमिकआधारित नैतिक शक्ति ने विद्यार्थियों में भी प्रतिरोध की नई चेतना जगाई। इसी प्रेरणा से 1960 का सिटइन मूवमेंट जन्मा, जब ग्रीन्सबोरो के चार छात्रों ने श्वेतआरक्षित लंच काउंटर पर बैठकर अलगाव को चुनौती दी। कुछ ही महीनों में हजारों छात्रों ने इस अहिंसक सत्याग्रह के माध्यम से नस्लीय भेदभाव के खिलाफ बिगुल फूंक दिया । 1961 का फ्रीडम राइड आंदोलन—जिसकी रीढ़ श्रमिक और छात्र थे—अमेरिकी लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा बन गया। बसों में सवार शांतिपूर्ण आंदोलनकारियों पर श्वेत भीड़ की क्रूर हिंसा और गिरफ्तार अश्वेत यात्रियों को प्रताड़ित किये जाने की ख़बरों ने अमेरिका की अंतरराष्ट्रीय छवि को गहरा आघात पहुँचाया।

1963 का 'मार्च ऑन वॉशिंगटन' आज भले ही किंग के 'आई हैव अ ड्रीम' भाषण से पहचाना जाता हो, पर इसकी नींव श्रमिक नेता ए. फिलिप रैंडोल्फ और ब्रदरहुड ऑफ स्लीपिंग कार पोर्टर्स यूनियन ने रखी थी। इस मार्च का आधिकारिक नाम—'नौकरियों और स्वतंत्रता के लिए वॉशिंगटन मार्च'—स्पष्ट करता है कि यह आंदोलन मूलतः श्वेत और अश्वेत मजदूरों के बीच समानता, आर्थिक न्याय और श्रमिक अधिकारों की माँग से उपजा था। वॉशिंगटन मार्च ने न केवल नस्लीय भेदभाव के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाई, और सिद्ध किया कि श्रमिक आंदोलन, अहिंसा और शांतिपूर्ण अनुशासन के द्वारा व्यापक सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

मार्टिन लूथर किंग द्वारा आंदोलन की जननी कही जाने वाली सेप्टिमा क्लार्क का योगदान नस्लीय भेदभाव के इतिहास में अद्वितीय है। उनके सिटीजनशिप स्कूलों ने— अश्वेत श्रमिकों को साक्षर बनाया, उन्हें मतदान के लिए पंजीकरण कराने में सक्षम किया ,यूनियनों और आंदोलनों में नेतृत्व विकसित किया। उनके प्रयासों का ही सुखद परिणाम है कि आज अमेरिकी कांग्रेस में अश्वेत प्रतिनिधित्व अपने ऐतिहासिक उच्च स्तर पर है—और यह सब बिना किसी आरक्षण के संभव हुआ।

इन आन्दोलनों से बढ़ते दबाव के कारण राष्ट्रपति कैनेडी को हस्तक्षेप करना पड़ा; उन्होंने आंदोलन को टकराव और हिंसा से हटाकर मतदातापंजीकरण जैसे लोकतांत्रिक कदमों की ओर मोड़ा, अंतरराज्यीय परिवहन में नस्लीय भेदभाव समाप्त करने के लिए संघीय आदेश लागू किए और नागरिक अधिकारों पर व्यापक कानून लाने की घोषणा की। दुर्भाग्य से 22 नवम्बर 1963 को कैनेडी की हत्या हो गई, और उनके बाद 1964 में सिविल राइट्स एक्ट पारित हुआ।

चाहे भारत हो या अमेरिका, इतिहास बताता है कि श्रमिक वर्ग केवल वेतन और सुविधाओं की लड़ाई नहीं लड़ता, बल्कि लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के आंदोलनों का प्रमुख वाहक रहा है। परिवर्तन की सबसे सशक्त पटकथा अक्सर उन्हीं हाथों से लिखी जाती है, जिनमें मेहनत के निशान होते हैं। अमेरिका में सामाजिक कार्यकर्ताओं को कई बार कम्युनिस्ट, विध्वंसक या व्यवस्था के लिए खतरा बताकर आरोपित किया गया। भारत में भी सामाजिक आंदोलनों पर ऐसे आरोप समय-समय पर लगते रहे हैं और उन्हें राजनीतिक द्वेष व वित्तीय पाबंदियों का सामना करना पड़ता है। फिर भी, श्रमिक आंदोलनों की लौ आरोपों से नहीं बुझती—वह हर चुनौती के साथ और प्रखर होती जाती है। वर्तमान में, गिग और असंगठित अर्थव्यवस्था के दौर में श्रमिक अधिकार और गरिमा की यह लड़ाई पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है।

वैवाहिक परंपराएं और बदलता परिवेश

दृष्टिकोण

प्रतिभा मिश्रा
सेवानिवृत्त प्राचार्य
जवाहर नवोदय विद्यालय

सुबह सवेरे आंख खुली तो उठने की इच्छा नहीं हो रही थी। कल रात दो शादियों में शिरकत करने के कारण, देर रात सोने से कुछ ठीक नहीं लग रहा था। दो शादियां और दो दृश्य मेरी आंखों के सामने साकार हो उठे थे।

पहली शादी एक राजपूत परिवार की थी जहां शाही शानो-शौकत बाहर से ही नजर आ रही थी। पहुंचते ही पारंपरिक तरीके से हल्दी, कुंकुम लगा कर स्वागत किया गया और हाथ जोड़कर विनम्रता पूर्वक महिलाओं वाले बड़े हॉल में लेजाया गया जहां घर की सारी महिलाएं अपनी रजवाड़ी पोशाक में नृत्य कर रही थीं। वहां नजर घुमाई कर देखा तो एक भी महिला या लड़कियां मुझे फैशनेबल वस्त्रों में अधनंगी पोशाक में नजर नहीं आईं।

और दुल्हन जो लंदन में रह कर पढ़ी थी उसे घूंघट में पूरे शर्मो लिहाज के साथ देख कर मानों मैं पचास साल पीछे लौट गयी थी,जब इस प्रकार के विवाह हुआ करते थे।

उस विवाह समारोह में शामिल होकर मन गद् गद् हो उठा था,ऐसा लगा मानों तपती जमीन पर वर्षा की ठंडी फुहारें पड़ गयी हों।

दूसरा विवाह समारोह एक मध्यम वर्गीय परिवार का था जो बड़ी मेहनत आज अपनी स्थिति सुधार पाए थे।बाहर से भव्य सजावट और शोरगुल सुनकर भीतर जाने का सोचती उसी समय लड़का बरात लेकर दरवाजे पर आगया था मगर ये क्या सामने से दुल्हन फैशनेबल अधनंगे परिधान में हाथ में मोबाइल थामें नाचती और मटकती हुई अपने परिवार के साथ दूल्हे का स्वागत करने मेरा पिया घर आया गीत के साथ उपस्थित हो गयी थी।लड़का भी उसके साथ दिल वाले दुल्हनिया ले जायेंगे पर नाचने लगा और दोनों के परिवार वाले बच्चे बुजुर्ग महिलाएं ताली बजा कर खुशी जाहिर कर रहे थे। मुझे लगा मानों मैं किसी फैशन परेड में शामिल होने आई हूं। ससुर,जेठ,देवर,भाई किसी से कोई शर्मोलिहाज नहीं।एक ऐसी परम्परा निभाई जा रही थी जिसे भारतीय संस्कृति तो नहीं कह सकते हैं। जहां एक ओर एक विवाह की शालीनता थी वहीं दूसरी ओर यह सब देख कर कवि दिनकर जी की पंक्तियां याद आयीं

हम क्या थे? क्या हैं,क्या होएंगे अभी। तभी ध्यान आया कि आज तो एक मई मजदूर दिवस है और मुझे अपने साथियों के साथ मजदूरों की बस्ती में जाना है।बाहर सूरज तपने लगा था। मुझे कल के विवाह समारोहों में हाथ में लाइटें उठा कर अपने पति और अपने छोटे बच्चों को एक हाथ से गोद में उठाये वो मजदूरनियां जो बारात के साथ चल रही थीं, याद आयीं जिन्हें अपने कच्चे घरों और झोंपड़ियों में लौट कर दिया जलाना है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com
'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

तरस आता है फूलों के हार पर, मनुष्य के व्यवहार पर

व्यंग्य

श्रीति राशिनकर
लेखक व्यंग्यकार हैं।

बगिया में फूल सचमुच कितने खूबसूरत दिखते है।खुशबू के तो क्या कहने ! इन दिनों वैसे ही लिली, मोगरा, गुलाब खूब खिलते है।हर ऋतु की पहचान फूलों के खिलने से भी तो होती है।जब तक फूल पौधों पर है सुरक्षित है प्रकृति द्वारा।लेकिन जैसे ही इन्हें तोड़कर ये दुकानदार के पास फूल पहुंचते है तब इनकी यात्रा किसी त्रासदी से कम नहीं होती। इन्हें देखकर वह खुश हो जाता है। बड़े करीने से ताजे फूल खराब फूलों से अलग करता है और फिर माला में पिरोने का काम शुरू हो जाता है। बड़े उत्साह के साथ फूलों को अपनी सृजनशीलता के साथ वह माला में पिरोता है। साथ साथ गुलदस्ते सजाते समय उसकी पैनी निगाह से वह रंगों का उचित संयोजन कर गुलदस्ते में पूरी जान लगा देता है।

जब मैं माली को माला बनाते देखती हूं तो यही प्रश्न मेरे जेहन में आता है कि इतनी सुंदर मालाएं मंदिरों के अलावा किस किस के गले की शान बढ़ाएगी ! मंदिरों से याद आया भगवान की मूर्तियों पर पुजारीजी भक्तों द्वारा दिए गए हार चढ़ाते है फिर जैसे ही नए भक्त हार लेकर आते है और भीड़ को देखते हुए पंडितजी भक्त के हाथों से हार लगभग खींचते हुए मूर्ति पर चढ़ाते है और पुराने हार उतारकर अपने सहायक को देते है।सहायक मंदिरों के पीछे हार इकठ्ठा करता है ,लेकिन इन फूलों का बाद में क्या हश्र होता है ! कोई नहीं जानता है। फिर भी आजकल कई मंदिर प्रशासन चढ़ावे को निर्धारित स्थान पर चढ़ाने की व्यवस्था रखते है जो काबिले तारीफ है। कुछ दिनों पूर्व एक कार्यक्रम में जाना हुआ। कार्यक्रम में अध्यक्ष,मुख्य अतिथि और पांच विशेष अतिथि उपस्थित होने थे,आयोजकों ने कम से कम बीस मालाओं की व्यवस्था की थी। कार्यक्रम के प्रारंभ में मां सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण पश्चात अतिथियों को माला पहनाने का दौर शुरू हुआ।

निर्धारित रूपरेखा के अनुसार मालाएं पहनाई गई। लेकिन यह क्या ! हॉल में मौजूद अनेक लोग आकर अपने अपने प्रिय अतिथि को हार पहनाना चाह रहे थे। आयोजकों के गिनती के हार कम पड़ गए सो अतिथियों ने अपने गले से चढ़ाएं हार उतारकर उन्हें फिर पहनाने के लिए दिए। गनीमत यह रही कि सरस्वती माता के गले से हार नहीं उतरा। कार्यक्रम खत्म होते ही इन मालाओं का अतिथियों द्वारा स्थानांतरण हो गया। किसी ने अपनी माला स्टेज पर छोड़ी तो किसी ने माइक के गले में लटका दी। किसी ने जाते- जाते कूड़ेदान में डाल दी। बेचारे हार अपनी किस्मत पर रोते रहे।

चुनाव के बाद विजय रैलियों में फूलों की बरबादी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हजारों टन फूल नेताओं के आगमन पर बरसाएं जाते हैं। विजय जुलूसों में ये बदकिस्मत फूल अपनी हार पर रोते हैं। किसी के पैरों तले ये कुचल जाते हैं या वाहनों के नीचे दब जाते हैं। ये वही फूल हैं, जिनको हम बड़ी शान से अपने ड्राइंग रूम में सजाते हैं,इत्र बनाते हैं और तो और महिलाओं के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए गजरे के रूप में प्रयुक्त होते हैं।लेकिन सूखने के बाद उन्हें इधर उधर फेंकना कहा की इंसाफी है ! हमारे देश में कोई राजनैतिक हलचल हो,उत्सव हो या शादियां हो,हर पल फूलों का इस्तेमाल बेदर्दी से होता है। काश ये अबोध फूल कुछ बोल पाते। विवाह में बारात में दूल्हा घोड़ी पर चढ़ते- चढ़ते दूल्हे के दोस्त, मामाजी,काकाजी, सगे भाई ,दूर के रिश्ते के भाई आदि आदि इस कदर माला पहनाते हैं मानो वह विवाह नहीं किसी जंग पर जा रहा हो। कभी-कभी तो दूल्हे के हार घोड़ी को भी नसीब हो जाते हैं।

दूल्हा हर हार को सम्हालते हुए घोड़ी पर बैठकर सबके सामने मुस्कुराता तो है पर उसकी झुकी हुई गर्दन उसका दर्द बयां करती है। फिर वह दोस्त के कानों में फुसफुसाता है ,तब दोस्त को थोड़ी दया आती है और कुछ मालाएं गर्दन से हटा दी जाती है, लेकिन यह क्या शगुन तो शगुन है ! मालाएं कम नहीं होनी चाहिए सो बड़े बुजुर्ग फिर से मालाएं पहनाने में कमी नहीं करते। अब की बार तो पहले से ज्यादा हार दूल्हे की गर्दन पर होते हैं और दूर से देखने पर दूल्हा नहीं सिर्फ हार ही दिखते हैं। विवाह बेदी पर तो दुल्हन और दूल्हे की मालाओं का आदान प्रदान करने में होड लगी होती है। कभी दुल्हन को उसके भाई ऊंचा उठाते हैं तो कभी दूल्हे के दोस्त उसे उठा लेते हैं। इस बीच मालाएं जमीन पर गिर कर रिश्तेदारों के पैरों के नीचे आ जाती हैं।उसी समय फिर से मालाओं की व्यवस्था करने वाला व्यक्ति वर वधु को नई मालाएं देता है और विवाह संपन्न होता है। फूल हमारी संस्कृति है। फूल और मनुष्य का रिश्ता सदियों का रहा है। त्योहारों और बंदनवार पर सजे फूल ताजगी का अहसास तो कराते ही हैं ये हमें उत्साह और प्रेम का संदेश भी देते हैं।

आज का नया ट्रेंड 'वेलेंटाइन डे' का सेलिब्रेशन पर फूलों के आदान प्रदान से होता है। इस दिन फूलों को दुगने या चौगुने भाव से खरीदा जाता है। यही फूल रिश्ता 'ब्रेक' तो फूल दिल से उतरकर जमीन पर आ जाते हैं। काश प्रकृति इस दुरुपयोग के बारे में मनुष्य से कुछ कह पाती ! हमें ही इन नाजुक फूलों की बर्बादी के बारे में सोचना होगा ।

इस समय मुझे प्रसिद्ध कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदीजी की कविता फूलों की अभिलाषा याद आती है -

चाह नहीं ....

गिरकर भी फूल खुशबू बिखेरते है ,फूल हमें जीना सिखाते है !

फूल हमें प्रेम करना सिखाते है ! ! इसीलिए हमे भी तो इनसे प्यार करना होगा !

नारद जयंती पर विशेष

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

लेखक साहित्यकार हैं।

लोकधर्मी पत्रकारों के पुरोधा हैं देवर्षि नारद

नारद देवलोक और मनुष्यलोक के बीच एक सेतु बनाते हैं। इस सेतु को कोई भक्ति का नाम देता है, कोई समाधान के संवाद का। नारद लोकहित के लिये विष्णु के अंशावतार हैं ही इसलिये, कि वे पृथ्वी पर लोक-कल्याण की योजना पर काम कर सकें। वे देवों का संदेश लेकर राजप्रासादों में भी चले जाते हैं, और निर्वैर-निर्धन की कुटिया पर भी। वे जहाँ भी जाते है, कोई न कोई सकारात्मक समाचार लेकर जाते हैं। वे लोक-जीवन पर करुणा बरसाते हैं, दुःखी लोगों को अवसाद से बाहर निकालकर उस काम में जोत देते हैं, जो भगवान को निवेदित हो सके। ऐसे काम को ही नारद 'नारायण की उपासना' कहते हैं। हमारे साहित्य में अंतःप्रेरणा की देवी सरस्वती को श्वेत पद्म पर आसीन होकर वीणा बजाते हुए दिखाया जाता है। नारद भी अंतर्ज्ञान के देवता हैं, वे भी वीणा बजाते हैं, लेकिन एक जगह बैठकर नहीं। वे एक जगह बैठ ही नहीं सकते। वे बैठे रह जायें, तो सुर-नर-मुनि के बीच संवाद ही थम जाये। नारद दो कुशल संवादों के बीच में रहते हैं। जब भी कहीं सुलह हो रही हो, समस्याएँ हल हो रही हों, आपसी समझ से सामंजस्य स्थापित हो रहा हो, भक्ति की चर्चा चल रही हो, तो इस बात की गारंटी है कि वहाँ देवर्षि नारद मौजूद हैं। विद्वानों का मानना है कि सरस्वती और नारद का उद्देश्य एक ही है। दोनों ही इस पृथ्वी पर ज्ञान का साम्राज्य चाहते हैं।

एक नारद देवों के ऋषि होते हुए भी लोक-जीवन के बहुत करीब हैं। यह कौन नहीं जानता कि सब देव समर्थ हैं। उन्हें नारद की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी मनुष्यलोक के घबराये हुए लोगों को है। नारद मनुष्यों के सच्चे संवाददाता बनकर देवों के बीच जाते रहते हैं। नारद के बारे कहा जाता है कि वे देवों में भी घुले-मिले हैं, और मनुष्यों में भी। उनके जैसा कोई दूसरा चरित्र अब तक कहीं नहीं हुआ। यदि नारद के बारे में प्रचलित कथाओं के भीतर तक की यात्रा की जाये, तो हम पायेंगे कि नारद दोनों हाथों से ज्ञानामृत लुटाने वाले ऋषि हैं। वे लोक जीवन में ऊपर से उतरते हुए दिखाये जाते हैं मुस्कुराते हुए, वीणा के तार झनझनाते हुए, और 'नारायण नारायण' का मंत्र दान करते हुए।

नारद देवलोक और मनुष्यलोक के बीच एक सेतु बनाते हैं। इस सेतु को कोई भक्ति का नाम देता है, कोई समाधान के संवाद का। नारद लोकहित के लिये विष्णु के अंशावतार हैं ही इसलिये, कि वे पृथ्वी पर लोक-कल्याण की योजना पर काम कर सकें। वे देवों का संदेश लेकर राजप्रासादों में भी चले जाते हैं, और निर्वैर-निर्धन की कुटिया पर भी। वे जहाँ भी जाते है, कोई न कोई सकारात्मक समाचार लेकर जाते हैं। वे लोक-जीवन पर करुणा बरसाते हैं, दुःखी लोगों को अवसाद से बाहर निकालकर उस काम में जोत देते हैं, जो भगवान को निवेदित हो सके। ऐसे काम को ही नारद 'नारायण की उपासना' कहते हैं। हमारे साहित्य में अंतःप्रेरणा की देवी सरस्वती को श्वेत पद्म पर आसीन होकर वीणा बजाते हुए दिखाया जाता है। नारद भी अंतर्ज्ञान के देवता हैं, वे भी वीणा बजाते हैं, लेकिन एक जगह बैठकर नहीं। वे एक जगह बैठ ही नहीं सकते। वे बैठे रह जायें, तो सुर-नर-मुनि के बीच संवाद ही थम जाये। नारद दो कुशल संवादों के बीच में रहते हैं। जब भी कहीं सुलह हो रही हो, समस्याएँ हल हो रही हों, आपसी समझ से सामंजस्य स्थापित हो रहा हो, भक्ति की चर्चा चल रही हो, तो इस बात की गारंटी है कि वहाँ देवर्षि नारद मौजूद हैं। विद्वानों का मानना है कि सरस्वती और नारद का उद्देश्य एक ही है। दोनों ही इस पृथ्वी पर ज्ञान का साम्राज्य चाहते हैं।

नारद को केवल लोकमंगल अभीष्ट है। वे लोकधर्मी हैं। उनकी सारी योजनाएँ इस बात के लिये हैं कि मनुष्य को देवों का कोप न झेलना पड़े, मनुष्य तमस् के व्यूह में फंस कर न रह जाये, वह भगत्कृपा से कभी वंचित न हो। इसलिये वे प्रायः पृथ्वी पर ही विचरते हैं। यदि यह कहा जाये के नारद पार्थिव सत्ता को दिव्य प्रकाश से भर देने के अनुष्ठान में अहर्निश लगे हुए हैं, तो यह अतिशयोक्ति नहीं। लोगों को देवों के कुपित होने का भय सताता रहता है, लेकिन नारद कभी किसी पर कुपित नहीं होते। शायद इसीलिए लोक-जीवन में नारद भय का संचार नहीं करते, प्रेमपूर्ण भक्ति का संचार करते हैं। वे लोगों को वही रास्ता दिखाते हैं, जो चिरंतन सत्य की ओर ले जाता है। लोक-चेतना को भक्ति की रज से परिमार्जित करने वाले देवर्षि नारद का जीवन-चरित्र इसीलिये पावन है।

नारद लोगों को नारायण मंत्र से नहलाते हुए यह उपदेश जरूर देते है कि अपने सब कर्म भगवान् को अर्पित कर निश्चिन्त हो जाओ। अपने कर्मों से दुःखी रहने वाले लोगों को नारद आश्वस्त करते हैं कि 'समर्पण करो, कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा।' नारद हमेशा सच्चाई का साथ देते हैं, सच्चाई की ओर से पैरवी करते हैं, और उसकी जीत निश्चित् कराते हैं। नारद सदैव भ्रमणशील हैं, लोगों के भीतर तक उतरे हुए हैं, इसीलिए नारद के अलग से मंदिर नहीं होते, उनकी पूजा का विधान भी नहीं होता। वे लोकप्रिय हैं, लोकपाल हैं, लोक-पूजित हैं, लोक-निवेदन को पूरे ब्रह्माण्ड में गुंजायमान कर देने विलक्षण लोक-संवाद के सूत्रधार हैं। एक नारद ही हैं, जिनकी बात ब्रह्मा भी सुनते हैं, विष्णु भी और महेश भी।

नारद की सर्वाधिक ख्याति उन भक्तिसूत्रों के कारण हैं, जिनकी चर्चा प्रायः संत नामदेव,संत एकनाथ, संत ज्ञानेश्वर, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, चैतन्य महाप्रभु, विवेकानंद सहित उन सभी आचार्यों ने की, जो भक्तियोग को ही जीवन-साधना का मुख्य आधार मानते हैं। नारद के भक्तिसूत्र (जो लगभग 84 हैं) के अनुसार ईश्वर के प्रति सर्वोच्च प्रेम ही भक्ति है। कर्म और ज्ञान की अपेक्षा भक्ति स्वयं साध्य है। नारद अपने भक्तिसूत्रों के माध्यम से लोगों को सत्संगति की ओर प्रेरित करते हैं, और कर्मकांड से ऊपर उठने का परामर्श देते हैं।

आजकल लोग नारद को विश्व का पहला पत्रकार, पहला संवाददाता मानने लगे हैं। यह सही भी है, लेकिन लोक में नारद की व्याप्ति के और भी बहुत सारे आयाम हैं। वे लोकधर्मी पत्रकारों के पुरोधा हैं, तो हास्य के आचार्य भी हैं, उत्कृष्ट वीणावादक भी हैं। लोकवाद्य मंजीरे को भक्ति के लिये सबसे सरल साधन के रूप प्रयुक्त करने वाले वे पहले व्यक्ति हैं। देवों से संवाद करते समय उनकी व्यंजनाएँ अप्रतिम होती हैं। नारद सुदर्शन हैं, प्रियंवद हैं, दक्ष हैं, विनयशील है, नेतृत्व करना जानते हैं। वे जहाँ भी जाते हैं, बिना बुलाये जाते हैं, फिर भी सबका मन मोह लेते हैं। नारद सबको प्रिय हैं। वे लोगों को यही संदेश देते रहते हैं कि 'सबके प्रिय बनकर रहो, इसी में सबका कल्याण है।'

नारद जयंती पर विशेष

अमित राव पवार

युवा लेखक

लोककल्याण से टीआरपी तकः पत्रकारिता का विचलन

टीआरपी की होड़,डिजिटल क्लिक्स की प्रतिस्पर्धा व राजनीतिक-आर्थिक दबावों ने पत्रकारिता के स्वरूप को बदल दिया है। 'ब्रेकिंग न्यूज़' की जल्दबाजी में तथ्यों की पुष्टि पीछे छूट जाती है,और कई बार आधी-अधूरी या पक्षपाती सूचनाएँ समाज के सामने परोस दी जाती हैं। यह प्रवृत्ति न केवल पत्रकारिता की विश्वसनीयता को कमजोर करती है,बल्कि समाज में भ्रम और विभाजन भी पैदा करती है। ऐसे समय में देवऋषि नारदजी का आदर्श एक प्रासंगिक संदर्भ प्रस्तुत करता है। नारदजी संवाद करते थे,केवल सूचना नहीं देते थे। वे तथ्यों को समझते विश्लेषण करते और फिर उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत करते कि उससे समाधान और संतुलन की दिशा बन सके।उनका उद्देश्य कभी सनसनी फैलाना नहीं था,बल्कि सत्य को सार्थक रूप में सामने लाना था। आधुनिक पत्रकारिता के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि गति और सत्य के बीच संतुलन बनाए रखना। तकनीक ने हमें तेजी दी है,लेकिन क्या हमने उस तेजी के साथ जिम्मेदारी को भी उतनी ही मजबूती से अपनाया है? सोशल मीडिया के दौर में हर व्यक्ति संभावित 'सूत्र' बन चुका है,लेकिन हर सूचना विश्वसनीय नहीं होती।

सूचना के विस्फोट के इस दौर में पत्रकारिता पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली माध्यम बन चुकी है। स्मार्टफोन की स्क्रीन पर उभरती एक खबर कुछ ही पलों में जनमत तैयार कर देती है,सरकारों पर दबाव बना देती है और समाज की दिशा तक तय कर देती है। लेकिन इस तेज़, तात्कालिक और प्रतिस्पर्धा पत्रकारिता के बीच एक मूल प्रश्न बार-बार उभरता है, क्या हम अपने मूल उद्देश्य से भटक रहे हैं? यदि भारतीय परंपरा के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए,तो संचार और संवाद की अवधारणा कोई नई नहीं है। हमारे पुराणों में देवऋषि नारद जी का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि सूचना का आदान-प्रदान केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक उत्तरदायित्व था। नारदजी केवल संदेशवाहक नहीं थे,वे संवाद के वाहक थे। उनका हर हस्तक्षेप किसी न किसी रूप में लोककल्याण से जुड़ा होता था। वे तीनों लोकों देव,दानव और मनुष्य के बीच संतुलन स्थापित करने वाले एक सजग संप्रेषक थे। पौराणिक मान्यताओं और भारतीय परंपरा के अनुसार,देवर्षि नारद को ब्रह्मांड का प्रथम पत्रकार (First Journalist) माना जाता है। आज की पत्रकारिता, जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है,उसी उत्तरदायित्व को आधुनिक संदर्भ में निभाने का दावा करती है। इसका मूल कार्य है जनता को सूचना देना,उसे जागरूक बनाना और सत्ताधारी तंत्र को जवाबदेह बनाए रखना। लेकिन जब हम वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण करते हैं,तो पाते हैं कि पत्रकारिता का एक बड़ा हिस्सा अब सूचना से अधिक 'प्रभाव' पर केंद्रित हो गया है।

टीआरपी की होड़,डिजिटल क्लिक्स की प्रतिस्पर्धा व राजनीतिक-आर्थिक दबावों ने पत्रकारिता के स्वरूप को बदल दिया है। 'ब्रेकिंग न्यूज़' की जल्दबाजी में तथ्यों की पुष्टि पीछे छूट जाती है,और कई बार आधी-अधूरी या पक्षपाती सूचनाएँ समाज के सामने परोस दी जाती हैं। यह प्रवृत्ति न केवल पत्रकारिता की विश्वसनीयता को कमजोर करती है,बल्कि समाज में भ्रम और विभाजन भी पैदा करती है। ऐसे समय में देवऋषि नारदजी का आदर्श एक प्रासंगिक संदर्भ प्रस्तुत करता है। नारदजी संवाद करते थे,केवल सूचना नहीं देते थे।वे तथ्यों को समझते विश्लेषण करते और फिर उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत करते कि उससे समाधान और संतुलन की दिशा बन सके। उनका उद्देश्य कभी सनसनी फैलाना नहीं था,बल्कि सत्य को सार्थक रूप में सामने लाना था। आधुनिक पत्रकारिता के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि गति और सत्य के बीच संतुलन बनाए रखना।तकनीक ने हमें तेजी दी है,लेकिन क्या हमने उस तेजी के साथ जिम्मेदारी को भी उतनी ही मजबूती से अपनाया है? सोशल मीडिया के दौर में हर व्यक्ति संभावित 'सूत्र' बन चुका है,लेकिन हर सूचना विश्वसनीय नहीं होती। ऐसे में पत्रकार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है वह केवल खबर देने वाला नही,बल्कि सत्य का संरक्षक है। पत्रकारिता के तीन पारंपरिक स्तंभ सूचना,शिक्षा और मनोरंजन आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। लेकिन इन तीनों के बीच संतुलन बिगड़ता दिखाई देता है। मनोरंजन के नाम पर सनसनीखेज प्रस्तुति और सूचना के नाम पर पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग,समाज के विवेक को प्रभावित कर रही है। इसके विपरीत, नारदजी का संवाद हमेशा उद्देश्यपूर्ण और संतुलित होता था,जिसमें लोकहित सर्वोपरि रहता था।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में पत्रकारिता की शुरुआत जनसेवा के उद्देश्य से हुई थी। 'उदंत मार्तंड' जैसे प्रारंभिक समाचार पत्र सीमित संसाधनों के बावजूद सत्य और समाज के प्रति प्रतिबद्ध थे। आज संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद यदि पत्रकारिता अपने मूल्यों से समझौता करती है,तो यह चिंता का विषय है। हालांकि यह भी उतना ही सत्य है कि आज भी कई पत्रकार और मीडिया संस्थान निष्पक्षता और ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं। वे दबावों के बावजूद सच को सामने लाने का साहस रखते हैं और लोकतंत्र को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है,और उनकी आवाज़ अक्सर शोर में दब जाती है। वर्तमान समय में 'फेक न्यूज़', 'पेड न्यूज़' और 'प्रोपेगेंडा जर्नलिज्म' जैसी चुनौतियाँ पत्रकारिता की साख को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे में आवश्यकता केवल तकनीकी सुधार की नहीं,बल्कि नैतिक पुनर्जागरण की है।

पत्रकारिता को फिर से उस मूल भावना की ओर लौटना होगा,जहाँ सत्य,निष्पक्षता और जनहित सर्वोच्च हों। देवऋषि नारद जी का चरित्र हमें यही सिखाता है कि सूचना का अर्थ केवल खबर देना नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देना है। पत्रकारिता तब ही सार्थक है जब वह सत्ता से सवाल पूछे,समाज की पीड़ा को स्वर दे और बिना किसी भय या पक्षपात के सत्य को सामने लाए। अंततः यह कहना उचित होगा कि आधुनिक पत्रकारिता एक चौराहे पर खड़ी है। एक रास्ता उसे अधिक प्रभावशाली, लेकिन कम विश्वसनीय बना सकता है,जबकि दूसरा रास्ता उसे कठिन,लेकिन सम्मानजनक और भरोसेमंद बनाए रखेगा। चुनाव पत्रकारिता को ही करना है। यदि वह देवऋषि नारद जी के आदर्शों निष्पक्षता,निर्भीकता और लोककल्याण को अपनाती है, तो वह न केवल अपनी साख बचा पाएगी,बल्कि समाज को भी एक सशक्त और सकारात्मक दिशा दे सकेगी।

नारद जयंती पर विशेष

संजीव शर्मा

लेखक पीआईबी शिमला में सहायक निदेशक हैं।

नारद मुनिः केवल पत्रकार नहीं, प्रथम 'सोशल मीडिया पत्रकार'

धार्मिक कथा कहानियों के अनुसार ब्रह्मा जी के मानस पुत्र और भगवान विष्णु के परम भक्त नारद मुनि तीनों लोकों—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—में निर्बाध विचरण करते थे। वे जहां भी जाते, वहां की घटनाओं, परिस्थितियों और संदेशों को एकत्र कर दूसरे स्थान तक पहुंचाते। यह कार्य आधुनिक पत्रकारिता की मूल परिभाषा से काफी हद तक मेल खाता है—सूचना जुटाना, उसका संप्रेषण करना और समाज को प्रभावित करना। नारद मुनि की सबसे प्रमुख खासियत उनकी निष्पक्षता और गतिशीलता थी। वे देवताओं, असुरों और मनुष्यों—सभी के बीच समान रूप से संवाद स्थापित करते थे। उनकी वीणा केवल संगीत का साधन नहीं, बल्कि संदेश प्रसार का माध्यम भी थी। यह आज के मोबाइल फोन और कैमरे की तरह उपयोगी थी।

आज सूचना क्रांति के दौर में जब सूचना की रफ्तार इंटरनेट और सोशल मीडिया से तय हो रही है एवं सोशल मीडिया पर हर सेकंड लाखों खबरें, रील्स और पोस्ट वायरल हो रही हैं, तब यह सवाल दिलचस्प लगता है कि क्या प्राचीन काल में भी ऐसा कोई संचार तंत्र था? इसका उत्तर पौराणिक कथाओं में ही मिलता है। पौराणिक संदर्भों में देवर्षि नारद का व्यक्तित्व इस सवाल का सटीक जवाब प्रस्तुत करता है। उन्हें केवल एक ऋषि या भक्त के रूप में नहीं, बल्कि सूचना और संवाद के प्राचीन वाहक के रूप में भी देखा जाता रहा है। धार्मिक कथा कहानियों के अनुसार ब्रह्मा जी के मानस पुत्र और भगवान विष्णु के परम भक्त नारद मुनि तीनों लोकों—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—में निर्बाध विचरण करते थे। वे जहां भी जाते, वहां की घटनाओं, परिस्थितियों और संदेशों को एकत्र कर दूसरे स्थान तक पहुंचाते। यह कार्य आधुनिक पत्रकारिता की मूल परिभाषा से काफी हद तक मेल खाता है—सूचना जुटाना, उसका संप्रेषण करना और समाज को प्रभावित करना। नारद मुनि की सबसे प्रमुख खासियत उनकी निष्पक्षता और गतिशीलता थी। वे देवताओं, असुरों और मनुष्यों—सभी के बीच समान रूप से संवाद स्थापित करते थे। उनकी वीणा केवल संगीत का साधन नहीं, बल्कि संदेश प्रसार का माध्यम भी थी। यह आज के मोबाइल फोन और कैमरे की तरह उपयोगी थी। वे कथाओं और भजनों के जरिए सूचनाएं इस तरह प्रस्तुत करते थे कि वे जनमानस में गहराई तक उतर जाएं—कुछ वैसा ही जैसा आज पॉडकास्ट या वायरल कंटेंट करता है। आधुनिक भाषा में कहें तो वे वायरल न्यूज मेकर थे, जिनकी एक खबर पूरे ब्रह्मांड में तुरंत फैलकर आज की तरह वायरल हो जाती थी।

पौराणिक कथाओं में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जो उनकी पत्रकारिता के विविध रूपों को स्पष्ट करते हैं। जैसे एक प्रसंग में वे महर्षि बाल्मीकि के आश्रम पहुंचकर उन्हें राम कथा सुनाते हैं। यही कथा आगे चलकर रामायण जैसे महाकाव्य की प्रेरणा बन जाती है। यह घटना आधुनिक संदर्भ में एक 'डिटेल्ड फीचर स्टोरी' या 'ब्रेकिंग न्यूज़' की तरह देखी जा सकती है, जिसने इतिहास रच दिया।

इसी तरह महाभारत काल में नारद मुनि ने पांडवों और कौरवों दोनों पक्षों के बीच संवाद और सूचना का आदान-प्रदान किया। उन्होंने युधिष्ठिर को राज्य नीति और धर्म के विषय में सलाह दी, वहीं दूसरी ओर कौरवों की स्थिति का भी आकलन किया। यह भूमिका आज के इन्वेस्टिगेटिव पत्रकार से कम नहीं लगती।

नारद मुनि केवल सूचना वाहक ही नहीं थे, बल्कि सामाजिक संवेदना के प्रतिनिधि भी थे। उन्होंने भक्त प्रह्लाद और ध्रुव जैसे पात्रों को भक्ति का मार्ग दिखाया और उनकी स्थिति को देवताओं तक पहुंचाया। यह आधुनिक पत्रकारिता के उस पहलू से मेल खाता है, जहां मीडिया कमजोर और वंचित वर्ग की आवाज़ बनता है।

अगर सोशल मीडिया के नजरिए से देखें, तो नारद मुनि का कार्य और भी प्रासंगिक लगता है। वे उस दौर में बिना किसी तकनीक के त्वरित सूचना प्रसार करते थे। उनकी एक बात पूरे ब्रह्मांड में प्रभाव डालती थी,कुछ वैसा ही जैसा आज कोई पोस्ट वायरल हो जाती है। उनकी 'नारायण-नारायण' की उद्घोषणा एक तरह से उनकी पहचान थी, जिसकी तुलना हम आज के हैशटैग से कर सकते हैं।

हालांकि नारद जी एवं आज के सोशल मीडिया के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर भी है। आज सोशल मीडिया में जहां फेक न्यूज, ट्रोलिंग और सनसनीखेज खबरें आम बात हो गई है, वहीं नारद मुनि का उद्देश्य हमेशा जनकल्याण और सत्य की स्थापना रहा। वे सूचना को हथियार नहीं, बल्कि सही संवाद का माध्यम मानते थे। वर्तमान डिजिटल युग में पत्रकारिता और सोशल मीडिया दोनों को नैतिकता की सख्त जरूरत है। नारद मुनि की तीनों लोकों की यात्राएँ हमें याद दिलाती हैं कि सच्चा संचारक वही है जो सूचना को हथियार नहीं, बल्कि समाज से जुड़ने का पुल बनाता है और धरातल पर जाकर आम लोगों की वास्तविकताओं से रूबरू कराता है।

समसामयिक संदर्भ में बात करें तो नारद मुनि का उदाहरण यह संदेश देता है कि पत्रकारिता केवल खबर देने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने की जिम्मेदारी भी है। निष्पक्षता, सत्य, विश्वसनीयता और जनहित जैसे मूल्य आज भी उतने ही जरूरी हैं जितने प्राचीन काल में थे। शायद यही कारण है कि नारद जयंती को पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाने की परंपरा विकसित हुई। यह केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि उस विचार का सम्मान है कि सूचना का सही उपयोग समाज को जोड़ सकता है, जागरूक बना सकता है और सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

देवर्षि नारद की जयंती के अवसर पर यह याद करना प्रासंगिक है कि पत्रकारिता कोई नया पेशा नहीं है। यह सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा एक दिव्य कर्तव्य है। यदि आज का 'मैराथन मीडिया' नारद मुनि की निष्पक्षता, गतिशीलता और लोकमंगल की भावना को अपनाए, तो सोशल मीडिया भी ज्ञान और सद्भाव का साधन बन सकता है।

श्रमिक दिवस पर श्रमिकों के हाथों फीता कटवाकर केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ने रेलवे ओवरब्रिज का ट्रैफिक किया प्रारंभ

श्रमिक दिवस के दिन लिया गया यह निर्णय श्रम के सम्मान, भागीदारी और समर्पण को दर्शाने वाला प्रेरणादायी उदाहरण बना

धार। अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर श्रम सम्मान का अद्वितीय संदेश देते हुए धार-महू लोकसभा क्षेत्र की सांसद एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने आज धार को गुणावद से जोड़ने वाले कनेक्टिंग रेलवे ओवरब्रिज (ब्रिज क्रमांक 217) की पूर्ण हो चुकी एक शाखा पर ट्रैफिक का शुभारंभ कर इसे आमजन की सेवा में समर्पित किया। इस विशेष अवसर पर मंत्री ने कार्यक्रम को श्रमिकों को समर्पित करते हुए निर्माण कार्य में लगे आदिवासी श्रमिक भाई-बहनों के हाथों फीता कटवाकर ट्रैफिक प्रारंभ करवाया। श्रमिक दिवस के दिन लिया गया यह निर्णय श्रम के सम्मान, भागीदारी और समर्पण को दर्शाने वाला प्रेरणादायी उदाहरण बना।

मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है

श्रीमती ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा कि श्रमिक राष्ट्र निर्माण की सबसे मजबूत नींव होते हैं और उनके परिश्रम से ही विकास के बड़े कार्य संभव हो पाते हैं। उन्होंने कहा कि यह रेलवे ओवरब्रिज क्षेत्र के यातायात को सुगम बनाने के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों को भी नई गति प्रदान करेगा। यह कार्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में हो रहे तीव्र विकास कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों से ही ऐसे जनहितकारी प्रकल्प समय पर पूर्ण हो रहे हैं और जनता को सीधा लाभ मिल रहा है। मंत्री ने इस दौरान श्रमिकों का सम्मान करते हुए उन्हें मिठाई खिलाई तथा उनके अथक परिश्रम की सराहना की। उन्होंने श्रमिक भाई-बहनों के हाथों श्रीफल अर्पित करवाकर उनके योगदान को विशेष रूप से सम्मानित किया और कहा कि श्रमिकों का सम्मान ही सच्चे अर्थों में श्रमिक दिवस की सार्थकता है। श्रीमती ठाकुर ने कहा कि धार क्षेत्र में शीघ्र रेल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए वे पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने संबंधित रेलवे अधिकारियों को शेष कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए तथा निर्माण कार्य की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर भी विशेष जोर दिया, ताकि आमजन को सुरक्षित एवं टिकाऊ सुविधा मिल सके। इस अवसर पर धार विधायक नीना विक्रम वर्मा, क्षेत्रीय ग्रामीणजन, बड़ी संख्या में श्रमिक साथी एवं रेलवे विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे। सभी ने इस अवसर को श्रमिक सम्मान के रूप में मनाते हुए इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

मुलताई में गेहूं-चना खरीदी केंद्रों का निरीक्षण

एसडीएम राजीव कहार ने व्यवस्थाओं का लिया जायजा, समस्याओं के शीघ्र समाधान का आश्वासन

बैतूल/मुलताई। मुलताई क्षेत्र में समर्थन मूल्य पर जारी गेहूं एवं चना खरीदी व्यवस्था का जायजा लेने के लिए अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) राजीव कहार ने शुक्रवार को विभिन्न खरीदी केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने कृषि उपज मंडी प्रांगण में संचालित खरीदी केंद्रों पर पहुंचकर व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन किया और किसानों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं। निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने गेहूं एवं चने की गुणवत्ता की जांच की तथा किसानों से खरीदी प्रक्रिया में आ रही दिक्कतों की जानकारी ली। उन्होंने समिति प्रबंधकों और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि खरीदी कार्य पूरी पारदर्शिता और सुचारू रूप से किया जाए। एसडीएम कहार ने किसानों से आत्मीयता के साथ मुलाकात कर उनकी फसलों और खरीदी प्रक्रिया से जुड़ी परेशानियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आश्वासन दिया कि सर्वर और माल उठाव (लिफ्टिंग) से संबंधित समस्याओं को जल्द दूर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि खरीदी केंद्रों पर स्थान की कमी है, तो इस संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा कर समाधान निकाला जाएगा। प्रशासन किसानों के साथ है और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी किसानों की उपज समर्थन मूल्य पर खरीदी जाए।

छुट्टी के दिन भी पहुंचे मंडी, व्यवस्थाओं का लिया जायजा- गौरतलब है कि एसडीएम राजीव कहार छुट्टी के दिन भी दोपहर में कृषि उपज मंडी परिसर पहुंचे। यहां कृषि साख समिति द्वारा गेहूं तथा बहुउद्देशीय सेवा सहकारी समिति द्वारा चना खरीदी की जा रही है। उन्होंने गेहूं खरीदी केंद्र पर तौल कांटे का निरीक्षण किया और समिति प्रबंधक एम.एल. नरवरे एवं हेमंत देशमुख को निर्देश दिए कि सभी गेहूं की कट्टियों पर किसान कोड अंकित करना अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाए।

कट्टियों में नमी से बढ़ी चिंता, वजन अंतर बना परेशानी- खरीदी केंद्रों पर एक नई समस्या भी सामने आ रही है। समर्थन मूल्य पर खरीदे गए गेहूं एवं चने की भराई में उपयोग होने वाली कट्टियों पर स्याही से दोनों ओर जानकारी प्रिंट की जाती है, जिससे उनमें नमी आ जाती है। नमी के कारण कट्टियों में भरे अनाज का वजन अधिक रहता है, लेकिन सर्वर बाधित होने से माल कई दिनों तक केंद्रों पर पड़ा रहता है।

हरिभूमि रिपोर्टिंग के बाद बढ़ी प्रशासनिक सक्रियता- उल्लेखनीय है कि हरिभूमि द्वारा लगातार खरीदी केंद्रों की अव्यवस्थाओं और किसानों की समस्याओं को उजागर किया जा रहा है। इसी के चलते प्रशासनिक अधिकारी भी अब नियमित रूप से इन केंद्रों की मॉनिटरिंग कर रहे हैं और व्यवस्थाओं को सुधारने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुलताई में समर्थन मूल्य पर गेहूं और चना खरीदी के दौरान सामने आ रही तकनीकी और व्यवस्थागत समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन सक्रिय नजर आ रहा है। हालांकि, जमीनी स्तर पर अभी भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं, जिनका त्वरित समाधान जरूरी है ताकि किसानों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

सोहागपुर पुलिस ने अंग्रेजी शराब जप्त की

सोहागपुर। सोहागपुर पुलिस थाना क्षेत्र में आबकारी एक्ट के तहत अलग-अलग स्थानों पर दविश देकर आरोपियों से देशी कच्ची, देशी शराब एवं अंग्रेजी शराब जब्त करके 03 प्रकरण पंजीबद्ध किए गए हैं। पुलिस ने बताया कि शोभापुर चौकी के अंतर्गत खुमानसिंह पिता राजू कुशवाहा निवासी

अजमेरी के कब्जे से हाथ भट्टी कच्ची महुआ की शराब 5 लीटर जप्त की गई। वहीं आकाश पिता जसवंत अहिरवार निवासी चंदेरी के कब्जे से 20 क्वार्टर देसी शराब प्लेन जप्त की गई। तीसरी कार्रवाई में ग्राम लांझा निवासी सरफराज उर्फ शादाब पिता शरीफ खान के कब्जे से अंग्रेजी शराब के 8 बोतल ऑफिसर चॉइस 750 एम एल की, 8 पीएम कंपनी के 10 नग 750 एम एल की बोतल, रॉयल स्टैच कंपनी के 24 नग 750 एम एल की बोतल कुल 42 बोतल कीमती 50 हजार 4 सौ रुपए की गत रात्रि में जप्त की गई है। सभी प्रकरणों में आबकारी एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज करके विवेचना की जा रही है।

सभी वाहनों की आवाजाही शुरू, 45 दिन बंद रखने का था निर्णय

बैतूल। शहर का गंज रेलवे अंडरब्रिज निर्धारित समय से दो दिन पहले ही यातायात के लिए पूरी तरह खोल दिया गया है। अंडरब्रिज 1 मई को सुबह 8 बजे से सभी प्रकार के वाहनों की आवाजाही के लिए शुरू कर दिया गया। इससे बडोरा से बैतूल गंज आने वाले वाहन चालकों के साथ-साथ रामनगर, गर्ग कॉलोनी सहित आसपास के क्षेत्रों के नागरिकों खासकर स्कूली बच्चों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। उल्लेखनीय है कि थर्ड लाइन निर्माण कार्य के कारण इस अंडरब्रिज को 3 अप्रैल 2026 से बंद किया गया था। प्रारंभिक योजना के अनुसार, इसे लगभग 45 दिनों तक बंद रखा जाना था। लेकिन लोगों की परेशानियों और जनप्रतिनिधियों की नाराजगी के बाद इसे 21 अप्रैल से आंशिक रूप से दोपहिया और हल्के वाहनों के लिए खोला गया था। अब शेष कार्य भी पूर्ण हो गए हैं, जिसके बाद इसे सभी वाहनों के लिए पूरी तरह से खोल दिया गया है। पहले इसके पूर्ण संचालन का लक्ष्य 3 मई निर्धारित किया गया था। अंडरब्रिज को सभी प्रकार के वाहनों के लिए खोले जाने से लंबा फेरा लगाकर आवागमन करने को मजबूर वाहन चालकों को राहत मिलेगी और सदर के ओवरब्रिज पर बढ़ते ट्रैफिक दबाव में भी कमी आएगी।

बडोरा से सीधे पहुंच पायेगे गंज क्षेत्र- गंज अंडरब्रिज बडोरा को गंज क्षेत्र से सीधे जोड़ता है। वर्तमान में बडोरा मंडी में उपज की बंपर आवक हो रही है। मंडी से उपज रेलवे माल गोदाम ले जाना पड़ता है, लेकिन अंडरब्रिज वाला रास्ता बंद होने से पूरा ट्रैफिक ओवरब्रिज पर शिफ्ट हो गया है। ऐसे में ओवरब्रिज पर वाहनों के दबाव के कारण बार-बार जाम की स्थिति निर्मित हो रही थी। वहीं अधिकतर भारी वाहन और यात्री बस कारगिल चौक, गेंदा चौक होते हुए सदर ओवरब्रिज से ही आना-जाना कर रहे है।

तीसरी रेलवे लाइन और अंडरब्रिज की लंबाई बढ़ाने किया था बंद

उल्लेखनीय है कि तीसरी रेलवे लाइन और अंडरब्रिज की लंबाई बढ़ाने के कारण रेलवे ने गत् 3 अप्रैल से 45 दिनों के लिए अंडरब्रिज से वाहनों की आवाजाही पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया था। अंडरब्रिज का रास्ता बंद होने से पूरा ट्रॉफिक सदर ओवरब्रिज पर शिफ्ट हो गया है, जिससे बार-बार वहां ट्रैफिक जाम के हालात बन रहे थे। लेकिन 21 अप्रैल से अंडरब्रिज से छोटे वाहनों की आवाजाही शुरू होने से वाहन चालकों को काफी राहत मिली थी। इसके बाद अब सभी प्रकार के वाहनों के लिए अंडरब्रिज का रास्ता खोल दिया गया है। अब अंडरब्रिज के पूरी तरह चालू होने से इन क्षेत्रों में यातायात सामान्य होने की उम्मीद है। बताया जा रहा है कि रेलवे द्वारा अंडरब्रिज में थर्ड लाइन के तहत विस्तार और संरचनात्मक कार्य किए गए हैं। इन कार्यों के पूरा होने के बाद, अब आवागमन पहले की तुलना में अधिक सुगम और व्यवस्थित होने की संभावना है।

दो दिन पहले ही पूरा किया काम

तीसरी रेलवे लाइन और अंडरब्रिज की लंबाई बढ़ाने के कारण रेलवे ने 3 अप्रैल से 45 दिनों के लिए वाहनों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया था। मध्य रेल, बैतूल के निर्माण विभाग द्वारा जारी सूचना के अनुसार, बैतूल रेलवे स्टेशन के इटारसी छोर पर रेलवे किलोमीटर 850/41-43 के बीच स्थित अंडरपास में तीसरी लाइन के निर्माण के लिए अंडरब्रिज की लंबाई बढ़ाई जानी थी। इस निर्माण कार्य की कुल अवधि लगभग 45 दिन निर्धारित की गई थी। जिसमें लगभग एक माह निर्माण कार्य और 15 दिन तराई के लिए निर्धारित किये थे, लेकिन निर्माण विभाग ने मात्र 28 दिनों में ही निर्माण कार्य पूर्ण कर अंडरब्रिज को सभी प्रकार के वाहनों के लिए खोल दिया है। जिससे वाहन चालकों ने राहत महसूस की है।

इनका कहना है -

1 मई से अंडरब्रिज को सभी प्रकार के वाहनों की आवाजाही के लिए खोल दिया गया है। पहले 21 अप्रैल से इसे आंशिक रूप से खोला गया था, जिसमें छोटे वाहनों से आवाजाही हो रही थी, लेकिन अब सभी प्रकार के वाहन आ-जा सकते है।

- मनोज पाटीदार, एक्सईएन, रेलवे विभाग

एसडीएम ने नव निर्मित शासकीय अस्पताल का निरीक्षण

सोहागपुर। अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने अनुभाग सोहागपुर अंतर्गत नव निर्मित शासकीय अस्पताल का निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने विशेष रूप से प्रसूति वार्ड का अवलोकन करके वहां उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लिया। आपने वार्ड की साफ-सफाई, भर्ती मरीजों की सुविधा, उपचार व्यवस्था, दवाओं की उपलब्धता,

प्रसूता महिलाओं के लिए आवश्यक संसाधन, स्टाफ की उपस्थिति एवं कार्यप्रणाली की जांच की। वहीं

अस्पताल में भर्ती मरीजों से बातचीत कर उनकी समस्याओं एवं अस्पताल में मिल रही सुविधाओं की जानकारी ली गई। मरीजों द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर अस्पताल प्रबंधन से आवश्यक सुधार एवं व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए गए। एसडीएम ने अस्पताल प्रबंधन को निर्देशित किया कि मरीजों को समय पर उपचार, स्वच्छ वातावरण, आवश्यक दवाएं एवं बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना प्राथमिकता रहे। उन्होंने विशेष रूप से प्रसूता महिलाओं एवं नवजात शिशुओं की देखभाल में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने सांदीपनी विद्यालय भैंसदेही का किया औचक निरीक्षण, टॉपर्स को किया सम्मानित

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने शुक्रवार को सांदीपनी विद्यालय भैंसदेही का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान सहायक कलेक्टर पुष्पराज खोटे एवं सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग विवेक पांडे उपस्थित रहे। निरीक्षण के दौरान विद्यालय की टॉपर विद्यार्थियों द्वारा कलेक्टर का पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया गया। कलेक्टर ने कंप्यूटर लैब का निरीक्षण कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे अत्याधुनिक एवं सर्वसुविधायुक्त बताया। वहीं पुस्तकालय के निरीक्षण के पश्चात उन्होंने सुझाव दिया कि पुस्तकों पर ब्लॉकवार नाम अंकित किए जाएं, जिससे व्यवस्था और बेहतर हो सके। उन्होंने कक्षाओं की साफ-सफाई एवं सुसज्जित व्यवस्था की सराहना की तथा प्रयोगशाला में उपलब्ध संसाधनों पर संतोष व्यक्त किया। स्वामी विवेकानंद हॉल की भव्यता की भी उन्होंने प्रशंसा की। नवीन भवन का निरीक्षण करने के बाद कलेक्टर ने टॉपर विद्यार्थियों, स्टाफ एवं पालकों से संवाद करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को कक्षा 12वीं के अंकों के साथ-साथ वर्तमान प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं जैसे नीट, क्लैट, यूपीएससी एवं सीए की तैयारी पर भी ध्यान देना चाहिए। इसके लिए ऑनलाइन कोर्स या विद्यालय स्तर पर साप्ताहिक कक्षाएं संचालित की जाएं। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि कक्षा 11वीं में विषय चयन से पूर्व विषय विशेषज्ञों द्वारा करियर काउंसलिंग अनिवार्य रूप से कराई जाए, जिससे विद्यार्थियों का भविष्य बेहतर बन सके। इस अवसर पर कक्षा 9वीं की छात्रा कुमारी रागिनी नरवरे (88.33 प्रतिशत), कक्षा 10वीं की मेघा उकंडे (95 प्रतिशत), कक्षा 11वीं की छात्रा प्रेरणा पटैय्या (90 प्रतिशत) एवं कक्षा 12वीं की छात्रा कुमारी डिंपल खण्डाईत (91.6 प्रतिशत) को सम्मानित किया गया। अंत में कलेक्टर ने सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

जिले में प्रथम चरण के तहत मकानों की गणना कार्य का किया शुभारंभ

बैतूल। जिले में जनगणना 2027 के प्रथम चरण यथा मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य 1 मई से प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के कुशल मार्गदर्शन और अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी वंदना जाट की उपस्थिति में जनगणना 2027 के पहले चरण मकानों की गणना कार्य का विधिवत शुभारंभ संयुक्त कलेक्टर कार्यालय भवन से प्रगति और विकास प्रगणक का पुष्पहार और पुष्पवर्षा कर किया गया। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी नरेन्द्र कुमार गौतम ने बताया कि प्रगति और विकास का पुष्प वर्षा से उत्साहवर्धन पुष्पवर्षा से प्रगणकों का उत्साहवर्धन कर जनगणना ब्लॉक में कार्य हेतु भेजा गया। जिला जनगणना अधिकारी द्वारा जनगणना को राष्ट्र निर्माण की आधारभूत प्रक्रिया बताते हुए जनगणना ब्लॉक

में कार्य प्रारंभ करने वाले प्रगणकों से कहा कि यह कार्य भविष्य के भारत और विकास योजनाओं की सुदृढ़ नींव है, इसे निर्धारित समय-सीमा में उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण करना अत्यंत आवश्यक है। प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को निर्देशित किया गया कि वे प्रत्येक परिवार तक पहुंच सुनिश्चित करते हुए सटीक एवं पूर्ण जानकारी का संकलन करें तथा कार्य को निर्धारित समयावधि में संपन्न करें। कार्यक्रम में प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का सम्मान करते हुए उन्हें विनम्र, संवेदनशील एवं उत्तरदायी व्यवहार के साथ कार्य करने तथा नागरिकों से सटीक जानकारी संकलित करने के लिए प्रेरित किया गया। इसके अलावा चार्ज अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रगणक पर्यवेक्षकों का मार्गदर्शन करने एवं उत्पन्न समस्याओं का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया गया।

समय-सीमा में टारगेट पूर्ण के निर्देश

जनगणना कार्य निदेशालय मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा गुरुवार को आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में दिये निर्देशानुसार जनगणना 2027 के प्रथम चरण हेतु प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को एचएलओ का फील्ड कार्य पूर्ण करने के लिए निर्धारित लक्ष्य समय-सीमा में समस्त चार्ज अधिकारी अक्षरशः पालन किया जाना सुनिश्चित करेगें। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार गौतम, बैतूल के ग्रामीण एवं तहसील चार्ज अधिकारी तथा जिला स्तरीय जनगणना टीम द्वारा जनगणना 2027 महाअभियान के प्रथम चरण के फील्ड कार्य के लिए स्वागत बेला में सक्रिय भूमिका निभाई गई।

स्व. मनोज खंडेलवाल स्मृति नाइट क्रिकेट प्रतियोगिता विधायक ट्रॉफी सीजन 3 के तृतीय दिवस में तीन मैच

सुबह सवेरे सोहागपुर। रेल्वे ग्राउंड में आयोजित स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग के तृतीय दिवस नाइट में तीन क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि रेल्वे ग्राउंड पर खचा-खच भरे परिसर में तीन मैच खेले गए जिसमें पहला मैच विश्वकर्मा फर्नीचर एंड सी एन सी विरूद्ध शिवांश क्लब के मध्य हुआ। जिसमें शिवांश क्लब ने जीत दर्ज की। दूसरा मुकाबला आर पी एस जी एवं रामगंज टाइगर के बीच हुआ। जिसमें रामगंज टाइगर ने जीत दर्ज की। तीसरा मैच रामगंज टाइगर एवं विश्वकर्मा फर्नीचर एंड सी एन सी के बीच हुआ। जिसमें रामगंज टाइगर ने जीत दर्ज की। इस गरिमामय क्रिकेट प्रतियोगिता में भाजपा नेता एवं पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी, नेताजी सुभाष चन्द्र शिक्षा समिति के व्यवस्थापक तहसील पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान, पूर्व पत्रकार संघ अध्यक्ष देवेंद्र कुशवाहा, पत्रकार आरिफ खान

आदि उपस्थित थे। स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग नाइट प्रतियोगिता की अंपायरिंग परिणय मालवीय, शिवम दुबे, शेख हैदर, ऋषभ रघुवंशी, अभिषेक, प्रवेश चौहान प्रीत ने की। स्कोरिंग उत्कर्ष दुबे, मानस दीवान गोल्डी ने की। खेल का आंखों देखा हाल

तहसील पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान एवं दीपक मंडल ने सुनाया। इसके पूर्व विधायक ट्रॉफी 3 सोहागपुर प्रीमियर लीग नाइट टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता के दूसरे दिन 3 प्रतियोगिता हुई। जिसमें पहला मैच चंद्रा इंटरप्राइजेज एवं पालीवाल 11 के बीच खेला गया। जिसमें पालीवाल जी 11 ने जीत दर्ज की। दूसरा मुकाबला पालीवाल 11 एवं आर पी एस जी के मध्य खेला गया। जिसमें पालीवाल 11 ने जीत दर्ज की। तीसरा मैच आर पी एस जी एवं चंद्रा इंटरप्राइजेज के बीच खेला गया। जिसमें आर पी एस जी ने जीत दर्ज की। इस अवसर भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। पत्रकार रूपेश मेहरा, पत्रकार आरिफ खान तथा स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल उपस्थित थे। प्रतियोगिता की एम्पायरिंग परिणय मालवीय, शिवम दुबे, सब्बीर शाह प्रीत ने की, स्कोरिंग सिद्धार्थ, कुकू मौर्य शोएब ने की। खेल का आंखों देखा हाल पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान, पत्रकार अरबाज दीपक मंडल ने सुनाया। आयोजक आशीष विश्वकर्मा ने बताया प्रतिदिन शाम 7 बजे से प्रतियोगिता में 3 मैच खेले जाएंगे। प्रतियोगिता का लाइव प्रसारण आर एस गैलरी यू ट्यूब चैनल पर किया जा रहा है।

रबी उपार्जन 2026 की मॉनिटरिंग, सफल संचालन हेतु वेयरहाउसों का निरीक्षण

सोहागपुर। अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी, तहसीलदार आर एस झरबड़े, नायब तहसीलदार आदि ने रबी उपार्जन 2026 की सतत मॉनिटरिंग एवं सफल संचालन सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न वेयरहाउसों का निरीक्षण किया।

निरीक्षण विशाल वेयरहाउस, सावी वेयरहाउस, विजयलक्ष्मी वेयरहाउस, नर्मदा वेयरहाउस एवं बालाजी वेयरहाउस का भ्रमण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। अधिकारियों ने उपार्जन केंद्रों पर तोल कांटे की शुद्धता एवं कार्यप्रणाली की जांच की गई। इसके साथ ही गेहू के तौल कार्य, बारदानों की उपलब्धता, स्टैकिंग व्यवस्था, साफ-सफाई, सुरक्षा व्यवस्था, किसानों की सुविधा, पेयजल व्यवस्था, छाया व्यवस्था, पंजीयन अनुसार खरीदी, रिकॉर्ड

संधारण, परिवहन व्यवस्था तथा भंडारण की समुचित स्थिति का निरीक्षण किया गया।

एसडीएम प्रियंका भल्लावी ने निर्देशित किया कि उपार्जन कार्य पूरी पारदर्शिता, समयबद्धता एवं सुचारू रूप से संपन्न हो तथा किसानों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। वहीं आपने वेयरहाउस प्रबंधकों को गुणवत्ता मानकों का विशेष ध्यान रखने, तौल में पारदर्शिता बनाए रखने तथा समय पर परिवहन एवं भंडारण कार्य पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया।

संक्षिप्त समाचार

जिपं की सामान्य सभा की बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रचना सुरेंद्र मेवाड़ा की अध्यक्षता में जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में संचालित गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा की गई और आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। बैठक में जिला पंचायत के सदस्यों द्वारा विभिन्न मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षि ?त कराया गया। बैठक में संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि अधिकारी ब्लॉक एवं ग्राम स्तरीय जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक करें और जल गंगा संवर्धन अभियान एवं विभागीय योजनाओं का प्रभावी संचालन करें। इसके साथ ही योजनाओं की प्रगति की जानकारी भी उपलब्ध कराएं। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

गेवी के सदस्यों ने किया टीकाकरण सत्रों का निरीक्षण

सीहोर (निप्र)। दिल्ली की ग्लोबल अलॉइंस फॉर वैक्सीन एंड इम्यूनाइजेशन (व्रङ्कद्ध) टीम के सदस्य डॉ शेखावत एवं डॉ श्रीनिवासन द्वारा सीहोर के वार्ड क्रमांक 33, 5 और वार्ड 19 में टीकाकरण सत्रों का निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि गेवी एक अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक निजी साझेदारी है जो विकासशील देशों में बच्चों के लिए टीकों की पहुंच बढ़ाकर जानलेवा बीमारियों से बचाती है।

23 मई तक बढ़ाई गई गेंहू उपार्जन एवं स्लॉट बुकिंग की अवधि

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार किसानों की सुविधा के लिए समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन एवं स्लॉट बुकिंग की अवधि बढ़ाकर 23 मई 2026 कर दी गई है। पहले यह तिथि 09 मई तक निर्धारित थी जिसे बढ़ाकर अब 23 मई कर दिया गया है। इसके साथ ही प्रत्येक उपार्जन केन्द्र पर न्यूनतम 06 तौल कांटों का प्रावधान पोर्टल पर किया गया है एवं उससे अधिक तौल कांटे रखने की सुविधा जिलों को दी गई है।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को मिला बहुउपयोगी वाहन

सीहोर (निप्र)। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा पूरे प्रदेश में बहुउपयोगी वाहन प्रदान किये गये है, जिसमें जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीहोर को भी वाहन प्राप्त हुआ है। इस वाहन के माध्यम से दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में विधिक साक्षरता कार्यक्रमों एवं विधिक सेवा गतिविधियों के संचालन में और अधिक गति एवं सुगमता प्राप्त होगी एवं विधिक सेवा योजनाओं का क्रियान्वयन अधिक सरलता से संपादित किया जा सकेगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा वाहन के लिए 01 वाहन चालक तथा लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए 01 कार्यालय भृत्य की संविदा आधार पर नियुक्ती किए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। अभ्यर्थी 30 अप्रैल 2026 शाम 05-30 बजे तक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कार्यालय में अपने दस्तावेजों सहित आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं।

नर्मदापुरम केंद्रीय जेल में मानसिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित

नर्मदापुरम (निप्र)। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भोपाल एवं जेल मुख्यालय म.प्र. भोपाल के आदेश के अनुपालन में केंद्रीय जेल नर्मदापुरम के खण्ड-अ में एक दिवसीय मानसिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर जिला चिकित्सालय नर्मदापुरम के मन कक्ष द्वारा लगाया गया। प्रतिमाह आयोजित होने वाले इस शिविर के क्रम में मंगलवार को जिला चिकित्सालय मन कक्ष से क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट सुश्री नाजिया सिद्दीकी एवं नर्सिंग ऑफिसर श्री कांति यदुवंशी ने जेल में परिरूद्ध बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। शिविर में 20 पुरुष बंदी और 10 महिला बंदी सहित कुल 30 बंदियों की मानसिक स्वास्थ्य स्क्रीनिंग की गई और उन्हें आवश्यक परामर्श दिया गया ।इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री संतोष सोलंकी, उप अधीक्षक श्री प्रहलाद सिंह बरकड़े, अष्टकोण अधिकारी श्री हितेश बंडिया, मैट्रन श्रीमति इंदुराज साहू सहित अन्य जेल स्टाफ उपस्थित रहे।

कलेक्टर एवं एसपी ने किया नीट परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण

नर्मदापुरम (निप्र)। आगामी नीट परीक्षा के मद्देनज़र जिले में प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। इसी क्रम में कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा एवं पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस. थोटा ने निर्धारित परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा परीक्षा के सुचारू, निष्पक्ष एवं पारदर्शी संचालन हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री मिश्रा ने स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्था, परीक्षा केंद्रों पर वीडियोग्राफी की व्यवस्था, परीक्षार्थियों की सघन जांच प्रक्रिया, स्ट्रांग रूम की सीलिंग एवं सतत निगरानी सहित प्रश्न पत्रों के सुरक्षित वितरण की व्यवस्थाओं की विस्तारपूर्वक समीक्षा की। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी व्यवस्थाएं निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार सख्ती से सुनिश्चित की जाएं।

राहवीर एवं पीएम कैशलैस योजना का हो व्यापक प्रसार

ब्लैकस्पॉट हटाने के लिए संबंधित निर्माण विभाग करे आवश्यक कार्यवाही- कलेक्टर

जिला एवं अनुविभाग स्तर पर तैयार किया जाए हेलमेट बैंक कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक संपन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक के दौरान कलेक्टर ने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने एवं यातायात व्यवस्था को सुरक्षित बनाने हेतु संबंधित विभागों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि हाईवे एवं अन्य प्रमुख मार्गों पर चिन्हित किए गए अतिक्रमण को सख्ती से हटाया जाए। कलेक्टर ने जिले में चिन्हित ब्लैक स्पॉट के सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश देते हुए कहा कि जहां आवश्यकता हो वहां अंडर पास निर्माण, रंबल स्ट्रिप, स्पीड ब्रेकर अथवा अन्य सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जाएं। कलेक्टर ने आरटीओ एवं यातायात विभाग को निर्देशित किया कि जिला स्तर पर एक हेलमेट बैंक बनाया जाए। तथा इसी की तर्ज पर अनुविभाग स्तर पर भी हेलमेट बैंक तैयार किए जाएं। तथा आम नागरिकों को हेलमेट उपयोग करने के प्रति प्रोत्साहित किया जाए जिससे सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर को कम किया जा सके। उन्होंने कहा की सभी शासकीय कार्यालय में भी कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी भी हेलमेट लगाने की जिम्मेदारी समझें। इसी के साथ कलेक्टर ने सीएमएचओ नर्मदापूरम को निर्देशित करते हुए कहा कि जिला स्तर पर एक निशुल्क हेल्थ कैंप आयोजित कर वाहन चालकों (ड्राइवर) की जांच की जाए।

बैठक में कलेक्टर ने नियमित चेकिंग के माध्यम से वाहन चालकों को वाहन सही लेन में चलाने हेतु निरंतर जागरूकता प्रसारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने पीएम कैशलैस एवं रहवीर योजना के संबंध में नियमित जन-जागरूकता अभियान संचालित करने के निर्देश दिए, जिससे गोल्डन आवर के दौरान सड़क दुर्घटना पीड़ितों को शीघ्र नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों पर उपचार मिल सके और जनहानि में कमी लाई जा सके। कलेक्टर ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) को निर्देश दिए कि कैशलेस उपचार योजना के तहत निजी अस्पतालों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए जाएं। उन्होंने मेडलेपर प्रक्रिया के शत-प्रतिशत ऑनलाइन क्रियान्वयन को प्रत्येक स्वास्थ्य केंद्र में सुनिश्चित करने के निर्देश दिए तथा किसी भी प्रकरण को ऑफलाइन दर्ज न करने के लिए भी निर्देशित किया। इसके साथ ही पुलिस विभाग से समन्वय कर बीएमओ सहित अन्य स्वास्थ्य अमले को आवश्यक प्रशिक्षण देने के निर्देश भी दिए गए।

कलेक्टर ने स्कूल एवं उच्च शिक्षा के अंतर्गत आने वाले सभी शैक्षणिक संस्थानों में सड़क सुरक्षा नियमों को लेकर नियमित जागरूकता अभियान संचालित करने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान कलेक्टर ने स्पष्ट रूप से निर्देश दिए की सड़क सुरक्षा समिति की बैठक के दौरान प्रस्तावित बिंदुओं पर संबंधित विभागों द्वारा तत्परता से कार्रवाई करते हुए समय सीमा के अंदर कंप्लायंस दर्ज किया जाए।

बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस. थोटा, सीईओ श्री हिमांशु जैन सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं समिति सदस्य उपस्थित रहे।

मेहनत और संकल्प से मिली सफलता

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले के गंजबासौदा तहसील अंतर्गत ग्राम गमाकर निवासी श्री कुलदीप रघुवंशी ने अपने अथक परिश्रम और दृढ़ संकल्प से यह सिद्ध कर दिखाया है कि सीमित संसाधनों के बावजूद भी सफलता हासिल की जा सकती है। श्री कुलदीप रघुवंशी पिता श्री राजेन्द्र सिंह रघुवंशी का जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े कुलदीप के माता-पिता ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए उन्हें सेंट एसआरएस हाई स्कूल, गंजबासौदा में शिक्षा ग्रहण कराई। वर्ष 2015 में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, उन्हें अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों के माध्यम से आईटीआई के बारे में जानकारी मिली, जिसमें कम समय और कम खर्च में बेहतर भविष्य की संभावनाएं बताई गईं। इस मार्गदर्शन से प्रेरित होकर कुलदीप ने आईटीआई, गंजबासौदा में स्टेनोग्राफर (हिन्दी) ट्रेड में वर्ष 2021 में प्रवेश लिया और वर्ष 2022 में सफलतापूर्वक डिप्लोमा प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने वर्ष 2023 में कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित स्टेनोग्राफर (हिन्दी) की कठिन परीक्षा को पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

सूखा राहत प्रकोष्ठ में प्राप्त 07 शिकायतों का प्राथमिकता से निराकरण हुआ

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा सूखा राहत प्रकोष्ठ में प्राप्त शिकायतों का निराकरण प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि नगरीय क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी पेयजल आपूर्ति किसी भी प्रकार से बाधित न हो, पानी के लिए ग्रामीणों को परेशान ना होना पड़े इसका विशेष ध्यान रखें। जिला प्रशासन की विशेष निगरानी में सुखा राहत प्रकोष्ठ में प्राप्त 07 शिकायतों का निराकरण किया गया है।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री अनुपम ने बताया कि जिन सात शिकायतों को निराकरण हुआ है उनमें विदिशा विकासखंड की ग्राम पंचायत गुरारिया लश्करपुर के ग्राम करई के शिकायतकर्ता श्री जितेंद्र बघेल द्वारा की गई शिकायत बीलों वाले बाबा के पास का हैंडपंप खराब है की शिकायत का निराकरण करते हुए हैंडपंप सुधार का कार्य किया गया है। इसी प्रकार ग्राम सुल्तानिया के शिकायतकर्ता श्री प्रीतम सिंह की शिकायत श्री जगत के घर के पास अहमदपुर रोड के पास वाला हैंडपंप खराब है की शिकायत का निराकरण कर हैंडपंप सुधार कार्य किया गया है। ग्राम चिड़ोरिया में भी शिकायतकर्ता श्री प्रीतम सिंह ने अहमदपुर चौराहा वाला हैंडपंप खराब है की शिकायत की थी जिस पर कार्यवाही करते हुए हैंडपंप सुधारा गया है। ग्राम गंगा बाद में शिकायतकर्ता श्री मयूर श्रीवास्तव के द्वारा श्रीवास्तव मोहल्ले का हैंडपंप खराब है की शिकायत की इस शिकायत का भी निराकरण तत्काल कर दिया गया है।इसके अलावा ग्यारसपुर विकासखंड की ग्राम पंचायत गूलर खेड़ी गुलाबगंज के शिकायतकर्ता श्री मनोज कुमार शर्मा की शिकायत पुलिस थाने के सामने वाली बस्ती में नल जल योजना का पानी न आने की शिकायत को संज्ञान में लेकर योजना संचालन का कार्य पंचायत द्वारा कराया जा रहा है। सिरोंज विकासखंड के ग्राम अबुआढाना के शिकायतकर्ता श्री शुभम शर्मा की शिकायत माध्यमिक शाला अबुआढाना स्थित हैंडपंप में मोटर पंप फंस जाने के कारण बंद है की शिकायत पर नवीन स्रोत हेतु वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है।

सिंगल क्लिक से पेंशन वितरण- विदिशा जिले के 1.16 लाख से अधिक हितग्राहियों के खातों में पहुंची 6.97 करोड़ रुपये की राशि

विदिशा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी द्वारा आज मंत्रालय, भोपाल स्थित प्रतिकक्ष से सिंगल क्लिक के माध्यम से पेंशन राशि का वितरण किया गया। यह राशि माह मार्च (अप्रैल 2026 में देय) की पेंशन के रूप में प्रदेशभर के हितग्राहियों को सीधे उनके बैंक खातों में अंतरित की गई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा समाज के सभी निर्धन, निराश्रित, वृद्धजनों, कल्याणी, परित्यक्ता, अविवाहिता एवं दिव्यांगजनों के कल्याण एवं आर्थिक सहायता के लिए विभिन्न प्रकार की पेंशन योजनाएं संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा दी जाने वाली यह सामाजिक सुरक्षा पेंशन राशि सिर्फ आर्थिक सहायता नहीं, यह सरकार के उस विश्वास का अंतरण है, जो इस बात का प्रतीक है कि सरकार हर परिस्थिति में हर घड़ी जरूरतमंदों के साथ खड़ी है।

उपरोक्त कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखने सुनने के प्रबंध विदिशा जिला मुख्यालय पर सुनिश्चित किए गए थे। विदिशा एनआईसी व्हीसी कक्ष में इस अवसर पर कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता तथा लाभान्वित हितग्राहियों के साथ साथ अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।राज्य के सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के माध्यम से इस पहल के अंतर्गत समाज के निर्धन एवं निराश्रित वर्गों जैसे वृद्धजन , विधवाएं, परित्यक्त महिलाएं, अविवाहिताएं एवं दिव्यांगजन को संचालित विभिन्न

पेंशन योजनाओं का लाभ प्रदान किया गया।

विदिशा जिले में कुल 1,16,246 हितग्राहियों को प्रति हितग्राही 600 रुपये के मान से कुल 6 करोड़ 97 लाख 47 हजार 600 रुपये की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से सीधे खातों में भेजी गई।

यह व्यवस्था पारदर्शिता और समयबद्धता सुनिश्चित करने के साथ-साथ हितग्राहियों को बिना किसी परेशानी के आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। शासन की इस डिजिटल पहल से जरूरतमंद वर्ग को समय पर सहायता मिल रही है, जिससे उनके जीवनयापन में सहूलियत हो रही है।

सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा उपलब्ध जानकारी अनुसार आज जिन पेंशन हितग्राहियों को राशि जारी हुई है उनमें मंदबुद्धि बहु विकलांग आर्थिक सहायता के 2091 हितग्राही, मुख्यमंत्री सामाजिक सुरक्षा कल्याणी पेंशन योजना की 23763 हितग्राही, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के 54025 हितग्राही, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय निशक्त पेंशन योजना के 1231 हितग्राही, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना की 14795 हितग्राही, कन्या अभिभावक पेंशन योजना के 943 हितग्राही, मुख्यमंत्री अविवाहत पेंशन योजना के 44 हितग्राही, सामाजिक सुरक्षा विधवा या परित्यक्ता पेंशन योजना के 418 हितग्राही, सामाजिक सुरक्षा वृद्धावस्था पेंशन योजना के 4303 हितग्राही, सामाजिक सुरक्षा पेंशन वृद्धा आश्रम के 01 हितग्राही, सामाजिक सुरक्षा निशक्त पेंशन योजना के 11698 हितग्राही और दिव्यांग शिक्षा प्रोत्साहन सहायता राशि के 2934 हितग्राही शामिल हैं।

मुख्यमंत्री ने जिले के 44,752 पेंशन हितग्राहियों के खाते में सिंगल क्लिक से अंतरित की 26 लाख रूपये से अधिक की राशि

राशि अंतरण कार्यक्रम में वीसी के माध्यम से जुड़े कलेक्टर सहित पेंशन हितग्राही

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सामाजिक न्याय विभाग द्वारा संचालित पेंशन योजनाओं के अंतर्गत प्रदेश के 33.45 लाख से अधिक पेंशन हितग्राहियों के खाते में 200.71 करोड़ रुपये से अधिक की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से अंतरित की। प्रदेश के साथ ही उन्होंने सीहोर जिले के 44,752 पेंशन हितग्राहियों के खाते में 26 लाख 85 हजार रुपये की राशि अंतरित की।

इस अवसर पर सीहोर कलेक्ट्रेट के एनआईसी कक्ष से कलेक्टर श्री बालागुरू के. और जिले के पेंशन हितग्राही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राशि अंतरण कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने जिले के अनेक पेंशन हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र भी वितरित किए।

इस दौरान उपस्थित पेंशन हितग्राहियों को पेंशन हस्तांतरण राशि का प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा संचालित पेंशन योजनाएं समाज के कमजोर एवं जरूरतमंद वर्गों के लिए महत्वपूर्ण सहारा हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले के सभी पात्र हितग्राहियों को समय पर पेंशन का लाभ सुनिश्चित किया जाए और कोई भी पात्र व्यक्ति योजना से वंचित न रहे। कलेक्टर ने हितग्राहियों से भी अपील की कि वे योजनाओं की जानकारी अपने आसपास के जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाएं, ताकि अधिक से अधिक लोग शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ले सकें। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी श्री रविन्द्र परमार, सहायक संचालक श्री महेश यादव सहित हितग्राही उपस्थित थे।

विदिशा में एयर रेड व ब्लैक आउट मॉक ड्रिल सफल — आपदा प्रबंधन की तैयारियों का किया गया प्रदर्शन

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा आपदा प्रबंधन की तैयारियों को परखने हेतु एयर रेड, ब्लैक आउट, सर्च एंड रेस्क्यू मॉक ड्रिल का सफल आयोजन किया गया। यह आयोजन मंगलवार की सायंकाल पुलिस लाइन विदिशा एवं आसपास के क्षेत्रों में सिविल डिफेंस, होमगार्ड, एसडीईआरएफ एवं पुलिस विभाग के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ।

मॉक ड्रिल का संचालन डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट मयंक कुमार जैन के नेतृत्व में तथा टीम कमांडर/प्लाटून कमांडर रश्मि दुबे के निर्देशन में किया गया , जिसमें स्थानीय प्रशासन का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम के तहत शाम 7-30 बजे पहला एयर रेड सायरन बजाया गया, जिसके साथ ही पूरे क्षेत्र में ब्लैक आउट किया गया। इसके पश्चात 7-35 बजे दूसरा सायरन और रात्रि 8-00 बजे

तीसरा व अंतिम सायरन बजाकर हवाई हमले की समाप्ति की सूचना दी गई।

मॉक ड्रिल के दौरान सिविल डिफेंस की 8 टीमों ने संयुक्त रूप से घायलों का ट्रायेज, सुरक्षित निकासी, प्राथमिक उपचार, राहत सामग्री वितरण एवं घायलों को एम्बुलेंस तक पहुंचाने जैसे महत्वपूर्ण कार्यों का प्रदर्शन किया। वहीं फायर फाइटिंग टीम ने आग पर त्वरित नियंत्रण प्राप्त करने की कार्यवाही का प्रदर्शन कर अपनी दक्षता दिखाई।

ब्लैक आउट के दौरान एसडीईआरएफ एवं सिविल डिफेंस टीमों द्वारा सर्च एंड रेस्क्यू अभियान भी चलाया गया। आयोजन से पूर्व दोपहर से ही प्रशासन ने मोबाइल थाना, पम्पलेट एवं सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिकों को जागरूक किया। इस अवसर पर एडिशनल एसपी श्री प्रशांत चौबे, आरआई श्री भुरे सिंह, सब इंस्पेक्टर पीयूष सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मॉक ड्रिल में लगभग 30 पुलिस जवान, 70 सिविल डिफेंस/आपदा मित्र/एनसीसी/एनएसएस स्वयंसेवक तथा 30 एसडीईआरएफ/होमगार्ड जवानों ने सहभागिता की।

76 किमी सड़क से जुड़ेंगी 72 बसाहटें, एंबुलेंस स्कूल बस पहुंचने से बदलेगी ग्रामीण तस्वीर

नर्मदापुरम (निप्र)। जिले के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में अब विकास की रफ्तार तेज़ होने वाली है। मुख्यमंत्री मजरा टोला योजना के तहत 72 बसाहटों को मुख्य सड़कों से जोड़ने की योजना पर काम तेज किया गया है। इसके अंतर्गत 76.336 किलोमीटर लंबाई की सड़कों का निर्माण प्रस्तावित है, जिससे हजारों ग्रामीणों को सीधा लाभ मिलेगा। म.प्र. सडक विकास प्राधिकरण इकाई नर्मदापुरम द्वारा उक्त कार्य किया जाएगा।

इन सड़कों के बनने से अब तक कच्चे रास्तों और कठिन पहुंच वाले इलाकों में एंबुलेंस की पहुंच सुनिश्चित हो सकेगी, जिससे आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएं समय पर मिल पाएंगी। साथ ही स्कूल बसों का संचालन आसान होगा, जिससे बच्चों की नियमित उपस्थिति और शिक्षा स्तर में सुधार की उम्मीद है।

ग्रामीण क्षेत्रों में ट्रैक्टर और अन्य कृषि यंत्रों की आवाजाही सुगम होने से खेती-किसानी को भी बड़ा लाभ मिलेगा। किसान आसानी से अपने उत्पाद बाजार तक पहुंचा सकेंगे, जिससे उनकी आय में वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेंगी।

योजना का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण (एमपीआरआरडीए) द्वारा किया जाएगा। इसमें विकासखण्ड केसला के 13 बसाहट, विकासखण्ड बनखेड़ी के 05 बसाहट, विकासखण्ड पिपरिया में 11 बसाहट, विकासखण्ड नर्मदापुरम के 03 बसाहट, विकासखण्ड सोहागपुर के 08 बसाहट, विकासखण्ड सिवनीमालवा 27 बसाहट एवं विकासखण्ड माखननगर के 05 बसाहटें शामिल हैं।

वर्तमान में परियोजना की डीपीआर तैयार की जा रही है। स्वीकृति के बाद निर्माण कार्य प्रारंभ होगा। योजना के पूर्ण होने पर न केवल आवागमन सुगम होगा, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि के क्षेत्र में भी व्यापक सुधार देखने को मिलेगा, जिससे ग्रामीण जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव आएगा।

'नीर पखेरू' अभियान को मिल रही गति, जिलेभर में पक्षियों के लिए की जा रही दाना-पानी की व्यवस्था

'एक सकोरा पानी पक्षियों की जिंदगानी' की थीम पर हो रहा अभियान का सफल क्रियान्वयन

नर्मदापुरम (निप्र)। नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती नीतू यादव एवं कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा द्वारा प्रारंभ किए गए 'नीर पखेरू' अभियान का जिले में प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत शासकीय कार्यालयों में पक्षियों के लिए पानी एवं भोजन की व्यवस्था करते हुए कार्यालय परिसरों तथा आसपास के वृक्षों पर पानी के सकोरे एवं घोंसले स्थापित किए जा रहे हैं। ÷एक सकोरा, पानी पक्षियों की जिंदगानी÷ थीम पर संचालित इस अभियान को विद्यालयों एवं विभिन्न शासकीय कार्यालयों में सक्रिय रूप से चलाया जा रहा है।

जिला प्रशासन द्वारा आम नागरिकों से भी अपील की गई है कि वे अपने घरों एवं आसपास के उद्यानों में पानी के सकोरे रखकर इस अभियान को जनभागीदारी के माध्यम से और व्यापक बनाएं, ताकि भीषण गर्मी में पक्षियों को पीने के लिए पानी उपलब्ध हो सके। साथ ही मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में संचालित प्रदेशव्यापी 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के अंतर्गत सार्वजनिक स्थलों पर प्याऊ आदि स्थापित करने के निर्देश भी दिए गए हैं, जिससे आमजन को शीतल पेयजल उपलब्ध हो सके।

इसी क्रम में कलेक्टर के निर्देशानुसार 'नीर पखेरू' अभियान के तहत अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कार्यालय एवं तहसील कार्यालय सिवनी मालवा में पक्षियों के लिए सकोरे लगाए गए तथा आमजन को भी इस पहल से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। इसी प्रकार अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कार्यालय एवं तहसील कार्यालय सोहागपुर में भी पक्षियों के दाना-पानी की व्यवस्था हेतु सकोरे स्थापित किए गए हैं। प्रशासन द्वारा अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार के माध्यम से नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण एवं जीव-जंतुओं के प्रति संवेदनशील बनने का संदेश दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री आवास पहुंचे दिग्विजय सिंह

सीएम मोहन यादव को 151 कुंडीय 'श्रीराम महायज्ञ' का दिया निमंत्रण, किसानों के मुद्दों पर हुई चर्चा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह शुक्रवार को भोपाल स्थित मुख्यमंत्री निवास पहुंचे। यहां उन्होंने सीएम डॉ. मोहन यादव से मुलाकात की। यह मुलाकात औपचारिक होने के साथ-साथ किसानों की समस्याओं को लेकर काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। दिग्विजय सिंह ने इस दौरान प्रदेश के किसानों की समस्याओं, खासकर गेहूं उपार्जन से जुड़ी दिक्कतों को मुख्यमंत्री के सामने रखा। दिग्विजय सिंह ने सीएम मोहन यादव को बताया कि कई जगहों पर किसानों को स्लॉट बुकिंग, खरीद केंद्रों पर भीड़ और समय पर उपज बेचने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि इन समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान किया जाए, ताकि किसानों को किसी तरह की दिक्कत न हो।

सीएम ने कहा- मैं खुद मॉनिटरिंग कर रहा हूं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस पर जानकारी दी कि राज्य सरकार गेहूं उपार्जन को लेकर पूरी तरह सतर्क है और किसानों की सुविधा के लिए हर जरूरी व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि अब तक 80 लाख मीट्रिक टन से अधिक गेहूं उपार्जन के लिए स्लॉट बुक हो चुके हैं और यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि वे खुद इस पूरी प्रक्रिया पर नजर बनाए हुए हैं, ताकि कहीं कोई गड़बड़ी या परेशानी न हो।

सीएम को दिया निमंत्रण

इस मुलाकात में सिर्फ किसानों के मुद्दे ही नहीं, बल्कि एक धार्मिक आयोजन का आमंत्रण भी दिया गया। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने मुख्यमंत्री को अपने गृह क्षेत्र राघौगढ़ के ग्राम भैंसाना में होने वाले 151 कुंडीय 'श्रीराम महायज्ञ' का आमंत्रण दिया। यह भव्य धार्मिक आयोजन 18 मई से 28 मई के बीच आयोजित किया जाएगा। खास बात यह है कि दिग्विजय सिंह और उनका परिवार इस महायज्ञ के संरक्षक के रूप में जुड़े हुए हैं।

सीएम ने शेयर की फोटो

इस मुलाकात की जानकारी मुख्यमंत्री कार्यालय ने भी अपने आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा की। वहां बताया गया कि दोनों नेताओं के बीच सौहार्द्रपूर्ण माहौल में चर्चा हुई और मुख्य रूप से गेहूं उपार्जन से जुड़ी व्यवस्थाओं पर बातचीत की गई।

गुरु रह गया गुड़ और चेला बन गया शक्कर, दिग्विजय सिंह ने पटवारी के यूं लिए मजे

मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने पार्टी के संगठनात्मक स्वरूप को लेकर जीतू पटवारी को नसीहत दी है। भोपाल में कांग्रेस के एक आधिकारिक मंच से पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने जीतू पटवारी को लेकर ऐसी बात कही जो चर्चा का विषय बन गया। इस इस पूरे मामले को कांग्रेस की अंदरूनी खींचतान भी बताया जा रहा है। वहीं, कांग्रेस के नेता इसे अच्छे माहौल की सार्थक चर्चा बता रहे हैं। दरअसल, शुक्रवार को कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग की बैठक हुई थी। इस बैठक में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी समेत कई सीनियर नेता शामिल थे। दिग्विजय सिंहे यह भी कहा कि जितने 'फ्री' जीतू पटवारी केंद्रीय नेतृत्व के साथ हैं, उतना कोई और प्रदेश अध्यक्ष नहीं है। दिग्विजय सिंह की यह बात सुनकर जीतू पटवारी ने कहा कि चेला तो आपका हूं। जीतू पटवारी के मैं आपका ही चेला हूं कहते ही दिग्विजय सिंह हंसने लगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि - 'गुरु रह गया गुड़ और चेला बन गया शक्कर।' यह संवाद सुनकर वहां मौजूद लोग हंसने लगें।

महाकाल मंदिर के पास खुदाई के दौरान मिला जलाधारी शिवलिंग, पूजा-पाठ का दौर शुरू

उज्जैन (नप्र)। विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर के पास खुदाई के दौरान एक शिवलिंग निकला है। यह शिवलिंग जलाधारी में था। खुदाई करने वाले बुलडोजर चालक ने तत्काल मंदिर के अधिकारी को इसकी सूचना दी। इसके बाद यहां भक्त और पुजारी पहुंचने लगे। साथ ही दर्शन-पूजन का सिलसिला शुरू हो गया।

2019 से महाकाल लोक का चल रहा निर्माण- दरअसल, 2019 से महाकाल लोक निर्माण और अन्य निर्माण कार्य के दौरान कई जगह खुदाई के कार्य चल रहे हैं। इस दौरान भी कई शिवलिंग और अन्य देवी देवताओं की प्रतिमा निकली थी। महाकाल मंदिर के पास बड़ा गणेश मंदिर क्षेत्र में टनल बनाने का काम चल रहा है। इस कार्य को लेकर यहां खुदाई हो रही है।

भस्मआरती के दौरान शिवलिंग दिखा- शुक्रवार की सुबह महाकाल मंदिर में भस्म आरती हो रही थी। इस दौरान निर्माण के लिए खुदाई का कार्य भी चल रहा था। बुलडोजर चालक को अचानक जलधारी सहित शिवलिंग दिखा। उसने तत्काल अधिकारियों को सूचना दी। मौके पर अधिकारियों के अलावा महाकाल मंदिर के पुजारी भी पहुंचे। सुबह से ही शिवलिंग पर जल और पुष्प अर्पित करने का सिलसिला शुरू हो गया। वहीं, आसपास के रहवासी भी दर्शन करने पहुंच रहे हैं।

अनादि काल से पूरी तरह शिवमय है इलाका- वहीं, शिवलिंग निकलने पर महाकाल मंदिर के पुजारी आशीष गुरु ने बताया कि यह अवंतिका नगरी है। जो की आदि अनादि काल से पूरी तरह शिवमय है। समय-समय पर त्रासदी के कारण यहां कई शिवलिंग और मंदिर जमीन में दब गए जो कि अब खुदाई के दौरान निकल रहे हैं।

नरेश प्रजापति, बुलडोजर चालक ने बताया कि भस्मारती के दौरान खुदाई करते वक्त मुझे शिवलिंग दिखा। जिसे तत्काल व्यवस्थित रखा गया और अधिकारियों को सूचना दी गई।

वहीं, महाकाल मंदिर के पुजारी आकाश शर्मा ने कहा कि मंदिर परिसर में खुदाई चल रही थी। भस्मारती के दौरान ही शिवलिंग मिला है। हम सभी लोगों ने यहां आकर दर्शन किया है। साथ ही साथ ही बाबा को जल चढ़ाया है।

सगी बहनें आपस में बदलना चाहती हैं पतियां

बड़ी ने बहनोई से रचाई शादी, छोटी की जिद- अब मैं बनूंगी जीजा की पत्नी, हाईकोर्ट से केस खारिज

ग्वालियर (नप्र)। एमपी हाईकोर्ट की ग्वालियर बेंच में एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसे सुनकर सभी लोग हैरान हैं। ये मामला दो बहनों का है, जो आपस में अपनी पतियां बदलना चाहती हैं। बड़ी बहन को छोटी बहन के पति से प्यार हो गया है। वहीं, छोटी का दिल भी अपने जीजा पर आ गया है। इसके बाद यह मामला पूरी तरह से उलझ गया है।

दरअसल, दतिया के रहने वाले गिरिजा शंकर ने हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका लगाई थी। इसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि मायाराम नाम के व्यक्ति ने मेरी पत्नी और बेटी को बंधक बना रखा है। इसके बाद हाईकोर्ट ने पुलिस को निर्देश दिए कि महिला को कोर्ट में पेश किया जाए।

महिला की एंट्री से केस में ट्विस्ट- वहीं, एमपी हाईकोर्ट के निर्देश पर महिला कोर्ट में पेश हुई है। इसके बाद पूरे मामले में ट्विस्ट आ गया। महिला ने कोर्टरूम में कहा कि उसका अपहरण नहीं हुआ है। मैं अपनी मर्जी से मायाराम के साथ गई हूं। मायाराम महिला की छोटी बहन का पति है। साथ ही महिला ने कहा कि हमने अपने पति से तलाक के लिए याचिका लगा रखी है।

छोटी बहन ने नहीं जताई आपत्ति- यह मामला सुनवाई के दौरान तब और दिलचस्प हो गया, जब मायाराम की पत्नी और उस महिला की छोटी बहन ने कोई आपत्ति नहीं जताई। उसने कह दिया कि हमारी बड़ी बहन हमारे पति के साथ रहना चाहती है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मुझे भी अपने जीजा के साथ रहने की अनुमति दें।

वैवाहिक जीवन से संतुष्ट नहीं हैं दोनों- बताया जा रहा है कि दोनों बहनें अपनी शादीशुदा जिंदगी से संतुष्ट नहीं हैं। दोनों सहमति और मर्जी से एक-दूसरे के पति के साथ वैवाहिक जीवन शुरू करना चाहती हैं। वहीं, दोनों बहनों के बच्चे भी हैं लेकिन बच्चे को लेकर कोई फैसला नहीं हुआ है।

बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका खारिज

वहीं, दोनों पक्षों को सुनने के बाद हाईकोर्ट ने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका को खारिज कर दिया है। साथ ही कह दिया है कि यह अपहरण का मामला नहीं है। यह पूरी तरह से पारिवारिक विवाद का मामला है। दोनों महिलाएं बालिग हैं, अपनी मर्जी से फैसला ले रही हैं।

कान्हा टाइगर रिजर्व में 'अज्ञात वायरस' का कहर नौ दिनों में बाघिन और चार शावकों की मौत

मंडला (नप्र)। मध्य प्रदेश के कान्हा टाइगर में एक भयानक जैविक खतरा मंडरा रहा है। नौ दिनों के भीतर यहां एक बाघिन और उसके चारों शावकों की सिर्फ नौ दिनों के अंदर मौत हो गई है। इस घटना से भारत के वन्यजीव जगत में हड़कंप मच गया है। साथ ही टाइगर स्टेट में एक संभावित जानलेवा वायरल संक्रमण फैलने का डर पैदा कर दिया है।

बाघिन के पूरे कुनबे की मौत- दरअसल, कान्हा की सरही रेंज की बाघिन टी-141 और उसके पूरे कुनबे की मौत की अब गहन फॉरेंसिक जांच की जा रही है। शुरुआती जांत में पता चला है कि इसका कारण अत्याधिक संक्रामक कैनिन डिस्टेंपर वायरस हो सकता है।

घटना ने वन अधिकारियों को झकझोर दिया- इस घटना ने कान्हा प्रबंधन को हिला दिया है। 21 अप्रैल को पहला शावक अमाही नाले के पास मृत मिया। 24 अप्रैल को दूसरे शावक का शव मिला, जिसका शरीर आंशिक रूप से सड़ चुका था। वह इटावारे नाले से मिला था। 26 अप्रैल को तीसरे शावक का शव मिला है। वहीं, 27 अप्रैल को वन टीमों को आखिरकार बीमार दिख रही बाघिन टी-141 और उसके एकमात्र जीवित शावक को बचा लिया। उन्हें मुक्की के क्वारंटाइन सेंटर में भेज दिया।

मंगलवार की रात बाघिन और उसके शावक की मौत- इलाज शुरू होने पर उम्मीद की किरण दिखी। 28 अप्रैल को बाघिन और उसके शावक में सुधार के लक्षण दिखे। दोनों ने खाना-पीना शुरू कर दिया। लेकिन यह बेहद कम समय के लिए रहा। मंगलवार की रात दोनों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। बाघिन टी-141 की मौत बुधवार सुबह हो गई। साथ ही उसी शाम को उसके शावक की मौत हो गई। नौ दिनों में बाघ का पूरा परिवार खत्म हो गया।

वन अधिकारी ने बताया कि पशु चिकित्सकों और वन्यजीव फॉरेंसिक विशेषज्ञों के द्वारा गहन जांच की जा रही है। तीसरे शावक के शव को विस्तृत जांच के लिए जबलपुर स्थित स्कूल ऑफ वाइल्डलाइफ फॉरेंसिक एंड हेल्थ में पहले ही भेजा जा चुका है।

कैनिन डिस्टेंपर वायरस के शिकार हुए

वहीं, जबलपुर वन्यजीव फॉरेंसिक प्रणाली से जुड़े सूत्रों ने संकेत दिए हैं कि शुरुआती निष्कर्षों से पता चलता है कि पांचों जानवर गंभीर श्वसन संकट, विशेष रूप से फेफड़ों से जुड़ी गंभीर जटिलताओं से पीड़ित थे। शुरुआती जांच में इनके फेफड़ों में गंभीर परेशानी मिली है। इस बात की संभावना है कि इन्हें अत्याधिक संक्रामक और जानलेवा वायरल संक्रमण कैनिन डिस्टेंपर हुआ हो।

जंगली जानवरों के लिए घातक है यह वायरस

वहीं, कैनिन डिस्टेंपर वायरस आमतौर पर जंगली जानवरों के लिए घातक माना जाता है। यह उनके श्वसन, पाचन और तंत्रिका तंत्र पर हमला करता है। आमतौर पर यह पालतू कुत्तों से जंगलों प्रजातियों में फैलता है। शुरुआती पोस्टमार्टम रिपोर्ट में जानवरों के पेट खाली पाए गए और फेफड़ों में गंभीर संक्रमण मिला है। ये कैनिन डिस्टेंपर के होने के संदेह को और पुख्ता करते हैं।

भूख से मौत को किया खारिज

कान्हा के अधिकारियों ने इस थ्योरी को खारिज कर दिया है। साथ ही कहा कि इस समय कान्हा टाइगर रिजर्व में 120 से ज्यादा अर्ध व्यस्क और व्यस्क बाघ और 40 से ज्यादा शावक मौजूद हैं। ये अपना शिकार कर पेट भर रहे हैं। अगर यहां शिकार की कमी होती तो बाघों को भूखा रहना पड़ रहा होता तो फिर उन्हें वैसी ही स्वास्थ्य समस्याएं क्यों नहीं हुईं।

कर्ज से परेशान युवक ने फांसी लगाई

पत्नी बोली फाइनेंस कंपनी के कर्मचारी रिकवरी के लिए धमकाते थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में रहने वाले रैपिडो चालक ने कर्ज से तंग आकर आत्महत्या कर ली। युवक ने प्राइवेट फाइनेंस कंपनी सहित कई अन्य लोगों से कर्ज ले रखा था। कर्ज नहीं चुकाने की हालत में लेनदार लगातार उसे परेशान कर रहे थे। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना बुधवार रात 10 बजे की बताई जा रही है।

45 वर्षीय उत्तम सिंह चौहान पिता सूर्य देव सिंह चौहान 610 क्वार्टर कोलार इलाके में रहते थे। वह मूल रूप से नरसिंहगढ़ के रहने वाले थे, बीते 10 महीने से कोलार इलाके में किराए से रह रहे थे और रैपिडो चालक के तौर पर काम कर रहे थे। उनकी पत्नी निर्मला चौहान ने बताया कि पति ने बजाज फाइनेंस से 15 लाख रुपए का लोन लेकर नरसिंहगढ़ में मकान बनाया था।

इसके बाद से परिवार की आर्थिक स्थिति गड़बड़ा गई। बमुश्किल पति किस्त चुका पाते थे। बीते कई महीनों से उनकी लोन की किस्त बाउंस हो रही थी। इससे वे तनाव में रहते थे, वहीं फाइनेंस कंपनी की ओर से लगातार किस्त चुकाने का दबाव बनाया जा रहा था। लिहाजा पति ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। पुलिस का कहना है कि मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। परिजनों के डिटेल बयानों के बाद आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

बेटे काम से नहीं लौटे, पत्नी डॉक्टर के पास गई थी- मृतक के दो बेटे हैं दोनों ही प्राइवेट काम करते हैं। सुसाइड से पहले तक दोनों ही काम से घर नहीं लौटे थे। जबकि उनकी पत्नी चेकअप कराने के लिए एक डॉक्टर के पास गई थी। घर लौटी पत्नी ने कई बार आवाज दी जब गेट नहीं खुला तो बेटों को कॉल किया और पड़ोसियों की मदद से गेट को तोड़कर घर के अंदर प्रवेश किया। जहां पति का शव फंदे पर लटका दिखाई दिया।

993 रु. तक महंगा हुआ, प्रदेश में 20 हजार से ज्यादा शादियां, होटलों पर भी होगा असर

शादियों से पहले कमर्शियल गैस सिलेंडर तीन हजार का हुआ

भोपाल (नप्र)। दो महीने की किल्लत के बीच मध्य प्रदेश में कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर 993 रुपए महंगा हो गया है। भोपाल में 3074 रुपए, इंदौर में 3179 रुपए, जबलपुर में 3290 रुपए, ग्वालियर में 3296 रुपए और उज्जैन में 3241 रुपए में सिलेंडर मिलेगा। दो महीने में रेट 1248 रुपए बढ़ चुके हैं। इसका सीधा असर आम लोगों पर पड़ेगा।

कमर्शियल सिलेंडर के रेट ऐसे समय बढ़े हैं, जब होटल, रेस्टोरेंट-ढाबों को जरूरत की 50 प्रतिशत गैस ही मिल रही है। जुलाई तक प्रदेश में 20 हजार से ज्यादा शादियां होनी हैं, ऐसे में आम लोगों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

500 लोगों के खाने पर 50 हजार रुपए खर्च बढ़ेगा- मध्य प्रदेश टेंट कैटर्स एसोसिएशन के रामबाबू शर्मा ने बताया कि सिलेंडर के रेट बढ़ने से होटल और कैटर्स में 10 प्रतिशत तक कॉस्टिंग का फर्क पड़ेगा। 500 लोगों के 5 लाख रुपए के खाने का बजट अब 45 से 50 हजार रुपए तक बढ़ेगा।

उन्होंने कहा कि सिलेंडर पर 5 से 10 प्रतिशत तक बढ़ोतरी ठीक थी, लेकिन करीब 50 प्रतिशत बढ़ोतरी न्याय संगत नहीं है। सरकार को फैसला वापस लेना चाहिए।

होटल संचालक बोले- खाना महंगा करना पड़ेगा- भोपाल होटल एवं रेस्टोरेंट संघ के अध्यक्ष तेजकुलपाल सिंह पाली ने कहा कि कमर्शियल गैस सिलेंडर 2 महीने में साढ़े 12 सौ रुपए तक महंगा हुआ है। यानी पहले की तुलना में 60 प्रतिशत रेट बढ़े हैं। फरवरी तक सिलेंडर 1800 रुपए में मिल जाता था, लेकिन अब 50 प्रतिशत आपूर्ति ही हो रही है।

कमर्शियल गैस नहीं मिलने से डीजल भट्टी और इंडक्शन का उपयोग हो रहा है। इससे डीजल और बिजली का खर्च बढ़ा हुआ है। अब खाने के रेट बढ़ाने पड़ेंगे।

फ्रेम में आ रही महिला को फोटोग्राफर ने टोका तो युद्ध का मैदान बन गया शादी समारोह

एक-दूसरे को कुर्सी और बर्तन से मारा

उज्जैन (नप्र)। एक शादी समारोह में जमकर कुर्सियां चली हैं। विवाद की शुरुआत इस बात को लेकर हुई कि शादी समारोह में आए एक फोटोग्राफर ने महिला को कह दिया कि मैडम थोड़ा साइड हो जाइए। इसके बाद बाराती और घराती भिड़ गए। दोनों तरफ से कुर्सियां चलने लगीं। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

आधी रात को हुआ था विवाद- दरअसल, यह विवाद की शुरुआत आधी रात को हुई थी। 27 अप्रैल को चिमनगंज थाना क्षेत्र के राजीव नगर में एक बारात आई थी। विवाद समारोह में फोटोग्राफी हो रही थी। इस दौरान फोटोग्राफर ने एक महिला को फ्रेम से अलग हटकर खड़ा होने के लिए कहा। इसी बात पर दोनों पक्ष के लोग एक-दूसरे पर टूट पड़े।

बर्तन और कुर्सियां फेंककर मारी एक-दूसरे को- विवाद की शुरुआत सामान्य कहासुनी से हुई थी। देखते ही देखते दूल्हा और दुल्हन पक्ष के लोग आपस में भिड़ गए। दोनों तरफ से एक-दूसरे पर कुर्सियां और बर्तन चलने लगे। शादी समारोह का पूरा माहौला हिंसक हो गया। इसके बाद सभी लोग एक-दूसरे को सिर्फ मारे जा रहे थे। इसके बाद पूरा माहौल बिगड़ गया। मिली जानकारी के अनुसार यह शादी अहिरवार समाज के एक परिवार में थी। महिला को साइड होने के लिए कहने पर ही विवाद पूरा बढ़ा था। बाद में समाजजनों ने हस्तक्षेप किया है। इसके बाद शादी संपन्न हुई है।

किसी ने पुलिस में नहीं कराई है शिकायत- वहीं, इस मामले में किसी ने भी पुलिस में शिकायत दर्ज नहीं करवाई है। वायरल वीडियो सोशल मीडिया के जरिए ही पुलिस की संज्ञान में आया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। साथ ही आरोपियों की पहचान कर रही है। पहचान होने और शिकायत आने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।